Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-48
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2018 तक
फाल्गुन शुक्ल षष्ठी से फाल्गुन शुक्ल द्वादशी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

सबक सिखाना हो.. पृष्ठ- 3

हृदय रोग रक्षक... पृष्ठ- 4

१८५७ की क्रान्ति... पृष्ठ- 5

पुणे का शनिवारवाडा... पृष्ठ- 8

लगा दिया आखिरी... पृष्ठ- 12

शुभकामनाएं

महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत पूर्व हिन्दू महासभा अध्यक्ष स्वातंत्र्य वीर सावरकर की पुण्यतिथि (२६ फरवरी) के अवसर पर समस्त देशवासियों व पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्रप्रकाश कौशिक — राष्ट्रीय अध्यक्ष
मुन्ना कुमार शर्मा — राष्ट्रीय महासचिव
वीरेश त्यागी — राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

भारत-पाक सीमा के पास बीएसएफ ने हथियारों का जखीरा बरामद किया

सीमा पार घुसपैठ व तस्करी को रोकना होगा–हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने गुरदासपुर सेक्टर में भारत–पाक सीमा पर कस्सोवाल सीमा चौकी के पास से तीन एके–४७ राइफल, दो पिस्टल, छह हथगोले और २५० कारतूसों समेत भारी मात्रा में गोलाबारुद बरामद किया। एक अधिकारी ने कहा कि यह हथियार और गोलाबारूद एक सफेद बैग में जमीन के अंदर दबा कर रखा गया था। बीएसएफ जवानों ने खोजी कुत्तों की मदद से इस बैग को तलाश किया। बीएसएफ के डीआईजी राजेश शर्मा ने कहा हमने छह मैगजीन के साथ चीन शेष पृष्ठ 10 पर

परमाणु क्षमता वाली अग्नि-१ए बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण

भारतीय वैज्ञानिको को हिन्दू महासभा की शुभकामनएं

• संवाददाता •

भारत ने परमाणु क्षमता से लैस स्वदेशी अग्नि–१ए बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया। ओडिशा तट से सटे अब्दुल कलाम द्वीप पर भारतीय सेना की स्ट्रैटेजिक फोर्स कमांड ने इस मिसाइल का सफल परीक्षण किया। अग्नि–१ ए मिसाइल स्वदेशी तकनीक से विकसित सतह से सतह पर मार करने वाली परमाणु क्षमता सक्षम मिसाइल है, जिसकी मारक क्षमता ७०० किलोमीटर है। १५ मीटर लंबी और १२ टन वजनी यह मिसाइल एक क्विंटल भार के पारंपरिक और परमाणु आयुध ले जाने में समक्ष है। बीते १८ जनवरी को भारत ने परमाणु शक्ति से लैस जमीन से जमीन पर मारक वाली देसी अंतर उमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि–५ का सफलतापूर्वक परीक्षण किया था। अग्नि मिसाइल श्रृंखला की सबसे शक्तिशाली और सबसे लंबी दूरी की मारक क्षमता वाली यह मिसाइल बीजिंग तक को निशाना बनाने में सक्षम है। रक्षामंत्री निर्मला सीतारमन ने चेन्नई में घोषणा करते हुए कहा था, हमने परमाणु शक्ति से लैस बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि–५ का आज सफलतापूर्वक परीक्षण कर लिया है। अंतर.महाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि–५ पांच हजार किलोमीटर के दायरे निशाना बनाने में सक्षम यह मिसाइल एक टन विस्फोटक ले सकती है। मिसाइल का परीक्षण ओडिशा उपतटीय क्षेत्र स्थित अब्दुल कलाम द्वीप परीक्षण केंद्र से किया गया था, यह मिसाइल का पांचवां परीक्षण था और रोड मोबाइल लांचर पर एक कनस्तर से यह लगातार किया जाने वाला तीसरा परीक्षण था। रक्षा अनुसंधान एवं विकास शेष पृष्ठ 11 पर

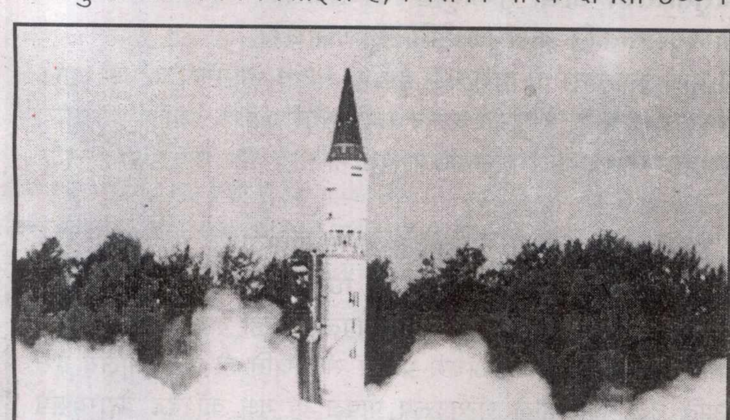

अभूतपूर्व श्रीजगन्नाथ रथयात्रा

सागर तट पर बसे पुरी शहर में होने वाले जगन्नाथ रथयात्रा उत्सव के दौरान आस्था का जो विराट वैभव देखने को मिलता है, वह और कहीं भी दुर्लभ है। देश–विदेश से लाखों लोग इस पर्व के साक्षी बनने हर वर्ष यहाँ आते हैं। देश के चार पवित्र ६ ाामों में एक पुरी के पुराने मुख्य मंदिर में योगेश्वर श्रीकृष्ण जगन्नाथ के रूप में विराजते हैं। साथ ही यहाँ बलभद्र एवं सुभद्रा भी हैं। सुभद्रा के आग्रह पर एक बार दोनों भाई बड़े स्नेह से उन्हें द्वारका भ्रमण के लिए ले गए थे। उसी की याद में हर साल आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को यह पर्व मनाया जाता है।

इस दिन भगवान जगन्नाथ, बलभद्र तथा देवी सुभद्रा की पवित्र प्रतिमाओं को रथों में बैठाकर श्रद्धापूर्वक यहाँ से ४ किमी. दूर गुंडीचा मंदिर तक ले जाया जाता है। यात्रा के लिए लगभग दो माह पूर्व अक्षय तृतीया के दिन से ही रथों के निर्माण का कार्य शुरू हो जाता है। इनके लिए विशेष प्रकार की लकड़ी लाई जाती है। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा के दिन स्नान यात्रा का आयोजन होता है। स्नान और शृंगार के बाद प्रतिमाओं को फिर गर्भगृह में ले जाया जाता है। इसके बाद आषाढ़ की अमावस्या तक मंदिर के पट भक्तों के लिए बंद हो जाते हैं। उड़ीसा राज्य का पुरी क्षेत्र जिसे पुरुषोत्तम पुरी, शंख क्षेत्र, श्रीक्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है, भगवान श्री जगन्नाथ जी की मुख्य लीला–भूमि है। उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी ही माने जाते हैं। यहाँ के वैष्णव धर्म की मान्यता है कि राधा और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक स्वयं श्री जगन्नाथ जी हैं। इसी प्रतीक के रूप में श्री जगन्नाथ से सम्पूर्ण जगत का उद्भव हुआ है। श्री जगन्नाथ जी पूर्ण परात्पर भगवान् हैं और श्रीकृष्ण उनकी कला का एक रूप हैं। ऐसी मान्यता श्री चैतन्य महाप्रभु के शिष्य पंच सखाओं की है।

पूर्ण परात्पर भगवान श्रीजगन्नाथ जी की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को जगन्नाथपुरी में आरम्भ होती है। यह रथयात्रा पुरी का प्रधान पर्व भी है। इसमें भाग लेने के लिए, इसके दर्शन लाभ के लिए हजारों, लाखों की संख्या में बाल, वृद्ध, युवा, नारी देश के सुदूर प्रांतों से आते हैं। रथयात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ चलकर जनता के बीच आते हैं और उनके सुख–दुःख में सहभागी होते हैं। सब मनिसा मोर परजा (सब मनुष्य मेरी प्रजा है), ये उनके उद्गार हैं। भगवान् जगन्नाथ तो पुरुषोत्तम हैं। उनमें श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, महायान का शून्य और अद्वैत का ब्रह्म समाहित है। उनके अनेक नाम हैं, वे पतित पावन हैं। रथयात्रा में सबसे आगे ताल ध्वज पर श्री बलराम, उसके पीछे पदम् ध्वज रथ पर माता सुभद्रा व सुदर्शन चक्र और अन्त में गरुड़ ध्वज पर या नन्दीघोष के रथ पर श्री जगन्नाथ जी सबसे पीछे चलते हैं। तालध्वज रथ ६५ फीट लंबा, ६५ फीट चौड़ा और ४५ फीट ऊँचा है। इसमें ७ फीट व्यास के १७ पहिये लगे हैं। बलभद्र जी का रथ तालध्वज और सुभद्रा जी का रथ जो देवलन जगन्नाथ जी के रथ से कुछ छोटे हैं। सन्ध या तक ये तीनों ही रथ मन्दिर में जा पहुँचते हैं। अगले दिन भगवान् रथ से उतर कर मन्दिर में प्रवेश करते हैं और सात दिन वहीं रहते हैं। गुंडीचा मन्दिर में इन नौ दिनों में श्री जगन्नाथ जी के दर्शन को आड़प–दर्शन कहा जाता है। श्री जगन्नाथ जी के प्रसाद को महाप्रसाद माना जाता है जबकि अन्य तीर्थों के प्रसाद को सामान्यतः प्रसाद ही कहा जाता है। श्री जगन्नाथ जी के प्रसाद को महाप्रसाद का स्वरूप महाप्रभु बल्लभाचार्य जी के द्वारा मिला। कहते हैं कि महाप्रभु बल्लाभाचार्य की निष्ठा की परीक्षा लेने के लिए उनके एकादशी व्रत के दिन पुरी पहुँचने पर मन्दिर में ही किसी ने प्रसाद दे दिया। महाप्रभु ने प्रसाद हाथ में लेकर स्तवन करते हुए दिन के बाद रात्रि भी बिता दी। अगले दिन द्वादशी को स्तवन की समाप्ति पर उस प्रसाद को ग्रहण किया और उस प्रसाद को महाप्रसाद का गौरव प्राप्त हुआ। नारियल, लाई, गजामूंग और मालपुआ का प्रसाद विशेष रूप से इस दिन मिलता है। कहते हैं कि राजा इन्द्रद्युम्न, जो सपरिवार नीलांचल सागर (उड़ीसा) के पास रहते थे, को समुद्र में एक विशालकाय काष्ठ दिखा। राजा के उससे शेष पृष्ठ 11 पर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों को अपने नजदीकी व्यक्ति से पीड़ा मिल सकती है। जरूरी कार्य स्वंय करें न कि दूसरों के सहारे रहें। सलाह और दवा बिना मॉगे नहीं दी जाती अन्यथा लोग आपका उपहास उड़ायेंगे। नयें सम्बन्धों के प्रति सकारात्मक सोंच रखना लाभकारी रहेगा।

वृष : आपके व्यक्तित्व के लोग कायल रहेंगे क्योंकि आप में जो बात है,वह हर किसी में कहां आ पाती है। इसलिए अपनी उपयोगिता बनायें रखें इसी में आप का हित होगा। परिवार में किसी बुजर्ग को शारीरिक कष्ट हो सकता है।

मिथुन : इस सप्ताह लम्बे समय से प्रतीक्षारत कार्यो में प्रगति होगी जिससे मानसिक शान्ति मिलेगी। परिवार के कुछ सदस्यों के प्रति मन में उदासीनता बनी रहेगी। महिलायें नयें कार्यो में असहज महसूस करेंगी। जल्दबाजी में किया गया कोई भी कार्य ठीक नहीं होता है।

कर्क : इस सप्ताह कुछ लोग पुरानी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करेंगे, परन्तु अपने ही टांग अड़ायेंगे। महिलायें हर समस्या से निपटने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहें। अनावश्यक वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित न करें।

सिंह : इस सप्ताह आपको किसी कारणवश कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ सकता है। सहयोग व विश्वास से काम में प्रगति आयेगी। नयीं योजनाओं में चुनौतियां सामने आयेंगी। अपनी क्षमता से अधिक कार्य करना पड़ सकता जिसकी वजह से आप शारीरिक रूप से थकान महसूस करेंगे।

कन्या : इस सप्ताह आपके जीवन में ढेर सारे परिवर्तन नजर आ रहें है। नौकरी व निवास आदि में स्थान परिवर्तन हो सकता है। सुरक्षा को लेकर गलतफहमी के शिकार हो सकते है। जीवन साथी के साथ आन्तरिक सामंजस्य गड़बड़ा सकता है।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों के कार्य क्षेत्र व परिवार में तनाव की स्थिति बनी रहेगी। नियमबद्ध तरीके कार्य होंगे तो प्रगति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। दूसरे के बर्ताव से तनाव मिल सकता है। नौकरी में परिवर्तन के संकेत है, जिस कारण आप खुद को असुरक्षित महसूस करेंगे।

वृश्चिक : कुछ लोगों को अपनी योजनाओं में उलटफेर करने से उनके जीवन में चार–चॉद लग सकते है। किसी मित्र अथवा सहयोगी से मद्द मांगना इस समय उचित नहीं है। आपके प्रति लोगों के व्यवहार में परिवर्तन आयेगा। अनिछा से किये गये कार्यो में हानि ही हाथ लगेगी।

धनु : इस सप्ताह आप सफलता के लिए सही कदमों की तलाश में रहेंगे। नयीं योजनाओं में आपको किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। किसी की बहुमूल्य सलाह से जीवन में नया परिवर्तन आयेंगा। विरोधी आप पर हावी रहेंगे और आप उन्हे घेरे रहेंगे।

मकर : इस सप्ताह काम की शुरूआत संतोषप्रद नहीं होने से मन में निराशा के भाव उत्पन्न हो सकते है। काम पूरे होंगे किन्तु काफी मशक्कत करनी पड़ेगी। पीड़ादायी सम्बन्धों से मुक्ति मिलेगी। किसी कारणवश मानसिक शान्ति छिन्न–भिन्न हो सकती है।

कुम्भ : इस सप्ताह सुरक्षा के तमाम प्रयास करने के बावजूद भी आप अलोचना के शिकार हो सकते है। लोगों से सहयोग मिलेगा किन्तु आपसी लोग टांग खिचने का प्रयास करेंगे। आपके प्रशासनिक कार्यो की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की जायेगी। काल्पनिक सपने आपके मन को व्यथित कर सकते है।

मीन : इस सप्ताह कुछ कार्य के दबाव में निज कार्य स्थगति करने पड़ सकते है। मन चिन्तित रहेगा किन्तु पुराने सहयोगियों से मद्द मिलेगी। अनचाहे प्रशंसक अपनी मंशा के अनुसार काम करने का प्रयास करेंगे। समान विचारधारा के लोगों के साथ कुछ गपाष्टक होगा। **पं० दीनानाथ तिवारी**

श्रीमद्‌भगवत गीता

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्रत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।

श्री भगवान् बोले–आदिपुरुष परमेश्वररूप मूलवाले और ब्रह्मारूप मुख्य शाखावाले जिस संसाररूप पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते हैं, तथा वेद जिसके पत्ते कहे गये हैं–उस संसाररूप वृक्ष को जो पुरुष मूलसहित तत्त्व से जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है।।१।।

अधश्रोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्र मूलान्यनुसन्ततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके।।

उस संसारवृक्ष की तीनों गुणों रूप जल के द्वारा बढ़ी हुई एवं विषय–भोगरूप कोंपलों वाली देव, मनुष्य और तिर्यक् आदि योनिरूप शाखाएँ नीचे और ऊपर सर्वत्र फैली हुई हैं तथा मनुष्य लोक में कर्मों के अनुसार बाँधने वाली अहंता–ममता और वासनारूप जड़ें भी नीचे और ऊपर सभी लोकों में व्याप्त हो रही हैं।।२।।

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्बो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा।
अश्रत्थमेनं सुविरूढमूलमसङगशस्त्रेण दृढेन छित्वा।।

इस संसारवृक्ष का स्वरूप जैसा कहा है वैसा यहाँ विचारकाल में नहीं पाया जाता, क्योंकि न तो इसका आदि है और न अन्त है तथा न इसकी अच्छी प्रकार से स्थिति ही है। इसलिये इस अहंता, ममता और वासनारूप अति दृढ़ मूलों वाले संसाररूप पीपल के वृक्ष को दृढ़ वैराग्यरूप शस्त्रद्वारा काटकर।।३।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2018 तक

अध्यक्षीय

सबक सिखाना हो गया है जरूरी

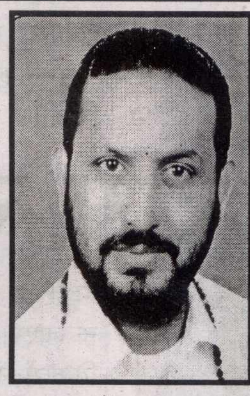

पाकिस्तान सीमा पर लगातार सीज फायर का उल्लंघन किया जा रहा है और हर रोज हमारे कई सैनिक शहीद हो रहे हैं। जवाब में हमारे जवान भी मुंहतोड़ कार्रवाई कर रहे हैं, ये सिलसिला सालों से चल रहा है। कांग्रेस सरकार के समय भी सीमा पार से लगातार ऐसे ही फायरिंग की जाती रही है, लेकिन उस समय मुख्य विपक्षी दल बीजेपी के नेता लगातार केंद्र सरकार की इच्छाशक्ति पर सवाल उठाते थे और दावा करते थे कि अगर वो सत्ता में होते तो पाकिस्तान को उसकी हर हरकत का जवाब उसी की भाषा में देते। लेकिन आज केंद्र में बीजेपी सरकार बने चार साल होने को आए हैं लेकिन सीमा पर हालात जस के तस बने हुए हैं। उड़ी हमले के बाद से भी पाकिस्तान की ओर से की गई फायरिंग में कई जवान शहीद या घायल हो चुके हैं। अभी दो दिन पहले ही पाकिस्तान की गोलबारी में एक सैन्य अधिकारी और ३ सैनिक शहीद हुए हैं। एक मां का २३ साल का इकलौता बेटा देश के लिए शहीद हो गया, मां ने ये कहकर कलेजे पर पत्थर रख लिया कि उसका बेटा देश के लिए काम आया। लेकिन सवाल है कि आखिर कब तक हम इस तरह जवान सैनिकों को खोते रहेंगे। आज देश राजौरी में एलओसी पर पाकिस्तान की ओर से हुई फायरिंग में कैप्टन कपिल कुंडू समेत ४ जवानों की शहादत का हिसाब मांग रहा है। देश की जनता सर्जिकल स्ट्राइक पर पीठ थपथपाने वाली मोदी सरकार से यही सवाल पूछ रही है कि पाकिस्तान को लेकर उसकी क्या नीति है। वैसे सेना हर समय पाकिस्तान को उसकी हरकतों का मुंहतोड़ जवाब देती रही है लेकिन पाकिस्तान सुधरने का नाम नहीं ले रहा। वैसे तो पाकिस्तान की ओर से हर दूसरे.तीसरे दिन सीजफायर का उल्लंघन होता है लेकिन उसका सबसे ज्यादा असर रविवार को देखने को मिला। जब पाक रेंजरों ने राजौरी और पुंछ में एलओसी पर भारतीय चौकियों को निशाना बनाकर एंटी टैंक गाइडेड मिसाइल दागी। पाकिस्तान की ओर से हुई इस गोलीबारी में हमने एक कैप्टन समेत ४ जांबाज जवानों को हमेशा के लिए खो दिया। वैसे वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ शरत चंद ने पाकिस्तान को सबक सिखाने की बात कही है। लेकिन क्या इतने से पाकिस्तान शांत होकर बैठ जाएगा। हरगिज नहीं पिछले साल २०१७ में एलओसी पर भारत की जवाबी फायरिंग में पाकिस्तान अपने १३८ सैनिकों को खो चुका है, लेकिन अपने सैंकड़ों जवानों के मारे जाने के बाद भी उसने कोई सबक नहीं सीखा। पिछले साल पाकिस्तान ने ७८० बार सीजफायर तोड़ा २०१६ में २२८, २०१५ में १५२ और २०१४ में १५३ बार पाकिस्तान की ओर से सीजफायर का उल्लंघन हुआ। ये आंकड़ा साफ बताता है कि मोदी सरकार बनने के बाद पाकिस्तान की ओर से एलओसी पर फायरिंग में इजाफा हुआ है। कई लोग मानते हैं कि मोदी सरकार की आक्रामक नीति के चलते पाकिस्तान बौखलाहट में आकर इस तरह की हरकत कर रहा है। जम्मू–कश्मीर में पिछले साल ऑपरेशन ऑलआउट के तहत सुरक्षाबलों ने १६० आतंकियों को मार गिराया। लेकिन अब भी पाकिस्तान की सरपरस्ती में घाटी में घुसपैठ की कोशिशें जारी हैं। घाटी में जहां सेना एक तरफ आतंकियों का सफाया करने में लगी है वहीं दूसरी तरफ पीडीपी–बीजेपी गठबंधन की सरकार पत्थरबाजों पर मेहरबान है। सेना पर पत्थरबाजी करने वालों पर महबूबा सरकार इस कदर मेहरबान हुई कि उसने सेना के काफिले पर पत्थर बरसाने वाले ६७३० लोगों के खिलाफ केस वापस ले लिया। घाटी में अलगाववादियों को लेकर पीडीपी का रवैया सभी को पहले से मालूम है लेकिन हर कोई यही जानना चाहता है कि आखिर बीजेपी को क्या हो गया है। आखिर पाकिस्तान को लेकर मोदी सरकार की क्या नीति है, ये बात सच है कि आप पड़ोसी नहीं बदल सकते और ना ही युद्ध किसी समस्या का समाधान है। लेकिन जब आपका पड़ोसी पाकिस्तान हो तो फिर आपको कड़े फैसले लेने ही होंगे। पहले १९६५, फिर १९७१ और आखिर में १९९९ में करगिल। इतिहास गवाह है कि पाकिस्तान को हर बार मुंह की खानी पड़ी है। लेकिन सांप को मारने के बाद जब तक उसे पूरी तरह कुचला ना जाए उसके काटने का खतरा बना रहता है। हमें लगता है पाकिस्तान के साथ भी कुछ ऐसा ही सलूक करना होगा। पाकिस्तान को लेकर हमने जितना संयम दिखाया है उतना शायद ही किसी देश ने दिखाया हो। दुनिया का हर देश अपनी रक्षा के लिए कड़े से कड़े कदम उठाता आया है, तो फिर हम क्यों चुप बैठें।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

आखिर यूपी पुलिस चाहती क्या है

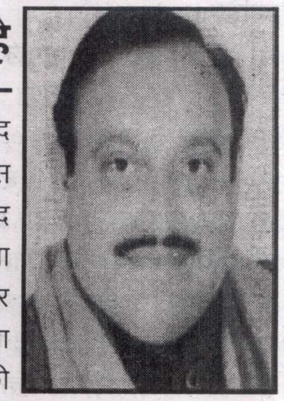

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री पद संभालने के साथ अपराध और अपराधियों के लिए जीरो टालरेंस यानी शून्य सहनशीलता दिखाने का दावा किया था। यह शायद एक राजनैतिक दांव था, ताकि जनता के सामने यह साबित किया जा सके कि पिछली सरकार में अपराध बहुत ज्यादा होते थे और भाजपा राज आते ही राम राज कायम हो जाएगा। जिसमें ताला लगाने की जरूरत भी नहीं होगी। यूं भी समाजवादी पार्टी की सरकार पर यह तोहमत हमेशा लगती रही है कि उसके शासन में बदमाशों के हौसले बुलंद थे। लेकिन स्थिति अब भी खास नहीं बदली है। फर्क इतना ही है कि अपराधों को रोकने के नाम पर उत्तर प्रदेश सरकार ने अदालती प्रक्रिया से ज्यादा मुठभेड़ों पर यकीन दिखलाया है। यूपी पुलिस की तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक योगी सरकार के १० महीने के कार्यकाल में अब तक पुलिस और अपराधियों के बीच ११४२ एनकाउंटर हो चुके हैं। जिसमें ३४ को पुलिस ने मार गिराया है और २७४४ अपराधी गिरफ्तार किए जा चुके हैं। वैसे इन सभी को अपराधी कहना शायद तब तक सही न हो, जब तक इन पर अदालत से जुर्म साबित न हो जाए। लेकिन योगी सरकार अदालत का यह बोझ शायद हल्का करना चाहती है और अपील, वकील, दलील का इंतजार किए बगैर सीधे गोलियों से अपराध कम करना चाहती है। बीते सप्ताह ही ४८ घंटों में यूपी पुलिस और एटीएस की जवाइंट टीम ने १५ एनकाउंटर किए, जिसमें एक बदमाश की मौत हुई। जानकारों का मानना है कि पिछले कुछ दिनों से एडीजे, आईजी, डीआईजी, एसएसपी के ट्रांसफर होने की चर्चा के बाद पुलिस ने फिर से गुडवर्क के नाम पर एनकाउंटर शुरू कर दिए हैं। माना जा रहा है कि कुर्सी बचाने या बेहतर कुर्सी हासिल करने के लिए पुलिस ने एनकाउंटर में इजाफा किया है। शनिवार को भी दिल्ली से सटे नोएडा में एक एनकाउंटर हुआ, जिसे फर्जी बताया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पदोन्नति पाने के लिए दारोगा ने एक जिम ट्रेनर पर गोली चलाई और इसे एनकाउंटर का नाम दिया। इस कथित फर्जी एनकाउंटर का सच पूरी जांच के बाद ही सामने आएगा, फिलहाल इस पर राजनीति शुरू हो गई है। वैसे योगी सरकार की एनकाउंटर नीति पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग भी सवाल उठा चुकी है। पिछले साल नवंबर में इस संबंध में एनएचआरसी ने मुठभेड़ों के संबंध में मीडिया रिपोर्टों का संज्ञान लेते हुए प्रदेश के मुख्य सचिव को नोटिस जारी किया था। आयोग ने मुख्यमंत्री के उस बयान का जिक्र किया था जिसमें कहा गया है अपराधी या तो जेल में होंगे या फिर यमराज के पास। आयोग ने कहा था कि कानून–व्यवस्था की स्थिति बहुत गंभीर होने पर भी कोई राज्य सरकार मुठभेड़ में हत्या जैसे उपायों को बढ़ावा नहीं दे सकती। इससे न्यायिक प्रक्रिया से इतर कथित अपराधियों की हत्या का सिलसिला शुरू हो सकता है। पुलिस मुठभेड़ पर सुप्रीम कोर्ट ने यह माना है कि किसी भी आदमी की जान जाती या वह गंभीर रूप से घायल हो जाता है तो उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। पुलिस ने आत्मरक्षा में किसी को मार दिया इसका मतलब यह कतई नहीं है कि उसकी जांच नहीं होगी। भारत का कानून कहता है कि किसी भी निर्दोष को सजा नहीं होनी चाहिए। इसलिए अदालती कार्रवाइयां कई बार बरसों–बरस खिंचती हैं। लेकिन एनकाउंटर नीति तो यह पता लगाने का वक्त भी नहीं देती कि कौन निर्दोष है और कौन दोषी। मुख्यमंत्री योगी भले ही एनकाउंटर के जरिए प्रदेश से अपराध खत्म करना चाहते हों। लेकिन उनका यह दांव अपराधियों पर बेअसर ही साबित हुआ है और राज्य में अपराधों में कोई खास कमी नहीं आई है। दंगे, बलात्कार, लूट, डकैती, हत्या सभी तरह के गंभीर अपराध हो रहे हैं। नोएडा के कथित फर्जी एनकाउंटर के एक दिन बाद ही काकोरी में एक पत्रकार पर हमले की खबर सामने आई। पत्रकार आबिद अली को ५–६ बदमाश उनके घर से बाहर बुलाकर पीटने लगे, लेकिन उनकी पत्नी ने रिवाल्वर से हवाई फायरिंग कर बदमाशों को भगाया और अपने पति की जान बचाई। पुलिस के मुताबिक यह मामला किराएदारी के विवाद का है। लेकिन इससे यह तो जाहिर होता ही है कि गुंडों–बदमाशों में पुलिस का कोई खौफ नहीं है, न ही कानून–व्यवस्था के लिए कोई इज्जत है। अपराधियों को सीधे यमराज के पास भेजने जैसी बातें करने की जगह अगर कानून का राज कायम करने में सरकार दिलचस्पी दिखाए तो यह सबके हित में होगा।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

हृदय रोग रक्षक औषधियाँ

यहाँ हम हृदय को सबल बनाने वाले तथा हृदय विकारों में उपयोगी कुछ औषधियों का वर्णन कर रहे हैं जिनका सेवन स्थानीय वैद्य की देखरेख में किया जाना चाहिए।

ब्राह्मीपुष्कर गुग्गुल

शुद्ध गुग्गुल तथा पुष्करमूल चूर्ण १००–१०० ग्राम लेकर ब्राह्मी स्वरस में खूब अच्छी तरह घुटाई कर ५०० मि.ग्रा. की गोलियाँ बना लें। १–२ गोली दिन में २–३ बार जल से दें। यह हाई ब्लडप्रेशर, कोलेस्ट्रॉल वृद्धि व अन्य हृदय विकारों में लाभकारी है। बी.एच.यू. में इस पर शोधकार्य भी हुआ है और अत्यंत लाभकारी पाया गया है। यह हृदयशूल तथा धड़कन वृद्धि को भी कम करती है। बी.एच.यू. के चिकित्सा विज्ञान संस्थान में ५० रोगियों को ६ मास तक ५०० मि.ग्रा. की ४ गोलियाँ प्रतिदिन ३ बार गरम पानी से दी गयीं जिसके परिणामस्वरूप ५० में से ६ रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो गये। ४१ रोगियों में से ३० रोगियों को हृदयशूल में लाभ हुआ तथा ई.सी.जी. में सुधार हुआ। ११ रोगियों में से ७ रोगियों के हृदयशूल में लाभ हुआ व शेष ४ रोगियों को कोई लाभ नहीं हुआ।

हृदय पौष्टिक अवलेह योग

जहरमोहरा नं. १ ३ ग्राम
खमीरागाजर्वाअम्बरी २४० ग्राम
मुक्तापिष्टी नं. १ ३ ग्राम
प्रभाकर वटी चूर्ण ३ ग्राम
सितोपलादि चूर्ण १५ ग्राम
नागार्जुनाभ्र रस स्पे. ३ ग्राम
अर्जुनसत्व चूर्ण ५ ग्राम
हृदयार्णव रस स्पे ३ ग्राम

प्रवालपंचामृत मुक्तायुक्त ५ ग्राम

सबसे पहले रसों, भस्मों व वटियों को आपस में मिलाकर घोटें। फिर उसमें चूर्णों को मिलाकर घोटें, उसके बाद सबको खमीरा गाजवां अम्बरी में मिलाकर रख लें या १०० ग्राम मिसरी का चूर्ण मिलाकर चाशनी तैयार करें। उसमें सबको मिलाकर अवलेह तैयार कर लें। ३० दिनों की औषधि तैयार होगी।

मात्रा : १–१ ग्राम सुबह–शाम खाकर ऊपर से सुखोष्ण दूध पीएँ।

गुण : यह अवलेह हृदय की दुर्बलता को दूर करता है, बढ़ी हुई धड़कन को सामान्य करता है, बेचैनी को दूर करता है तथा हृदय को मजबूत बनाता है। यह एंजाइना के दर्द (Angina Pain) से बचाव करता है तथा हृदय रोगों में लाभ करता है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता, खून की कमी, बेचैनी, घबराहट, थोड़े से परिश्रम से थकावट महसूस होना एवं साँस फूलना, कुछ भी अच्छा नहीं लगना, चिड़चिड़ा होना, उदासी छाये रहना, बहुत डर लगना, मानो हार्ट फेल हो जाएगा, धड़कन का बढ़ना आदि विकारों में इसके सेवन से पर्याप्त लाभ होता है। इसके सेवन के प्रथम दिन से ही रोगी लाभ महसूस करने लगता है। यह हार्ट अटैक (Heart Attack) से हृदय की रक्षा करता है।

मधुमेह के रोगियों को यह अवलेह नहीं सेवन करना चाहिए क्योंकि इसमें शर्करा है। मधुमेह रोगियों के लिए बिना शर्करा की औषधि तैयार करें।

हृतशूलान्तक

हृतशूलान्तक यानी हृदय के दर्द को दूर करने वाली औषधी (Anti Anginal Medicine) हृतशूल बड़ा भयावह होता है। जब उठता है तब रोगी को तड़पा देता है, कभी–कभी प्राण भी हर लेता है। ऐसी दशा में ऐसी औषधी की आवश्यकता होती है जो देते ही रोगी के दर्द को शांत करे। स्थायी चिकित्सा तो बाद में होगी। अपने दो दशकीय चिकित्साकाल में मुझे हृतशूल के १५–१६ अत्यधिक मामले देखने को मिले हैं। मैं विशुद्ध आयुर्वेदिक चिकित्सा करता हूँ। कई बार लोग बिना अनुभव किये हुए योगों के बारे में बढ़ाकर लेखों में लिख देते हैं पर व्यवहार न करने पर उनसे कुछ खास लाभ नहीं होता है। ऐसा मैंने कई बार अनुभव किया है। मुझे कुछ मामलों में असफलता भी मिली है पर अधिकतर मामलों में जिस योग से सफलता मिली है उसका नाम मैंने हृदयशूलान्तक रखा है।

❖ **सहस्त्र (१०००) पुटी अभ्रक भस्म से निर्मित–**

नागार्जुनाभ्र रस ५० ग्राम
ताम्रभस्म १०० पुटी २० ग्राम
मृगश्रृंग भस्म ५० ग्राम
पुष्करमूल चूर्ण २० ग्राम
भीमसेनी कपूर १० ग्राम
एलाबीज (इलायची छोटी) २० ग्राम
पिपली चूर्ण चौसठप्रहरी ३० ग्राम

सबको दशमूल क्वाथ में एक दिन घोटकर २५० मि.ग्रा. की गोलियाँ बना लें।

मात्रा : १–२ गोली सुबह–शाम शहद या अर्जुन क्षीरपाक से दें। ज्यादा दशा में २ गोली पीसकर शहद के साथ चाटने या चूसने को दें। अगर दवा उल मुश्क उपलब्ध हो तो उसमें मिलाकर दें। शीघ्र दर्द शांत होगा। औषधी जीभ पर रखने के तत्काल बाद रोगी राहत महसूस करेगा।

अधिकतर कंपनियाँ साधारण या १०० पुटी अभ्रक भस्म से नागार्जुनाभ्र तैयार करती हैं, वह उतना शीघ्र लाभ नहीं दर्शाता है। १००० पुटी से निर्मित अतिशय गुणकारी होता है। घुटाई भी लगातार ७ दिनों तक होनी चाहिए। दूसरी बात ताम्र भस्म भी १०० पुटी होनी चाहिए। साधारण ताम्र भस्म मिलाने पर योग उतना शीघ्र लाभकारी नहीं होता है। शीघ्र लाभ के लिए घटकद्रव्य सर्वोत्तम चाहिए। औषधी महंगी भले हो पर गुणकारी हो, यश दे, रोगी की प्राण–रक्षा करे।

हृदयरक्षक योग

मुक्ता भस्म नं. १ १० ग्राम
लौह भस्म (१०० पुटी) १० ग्राम
स्वर्णमाक्षिक भस्म १० ग्राम
अभ्रकभस्म (१००० पुटी) १० ग्राम
अकीक भस्म १० ग्राम
शुद्ध शिलाजीत १० ग्राम
वंशलोचन चूर्ण १० ग्राम
अश्वगंधाघनसत्व १० ग्राम
अर्जुनघनसत्व १० ग्राम
प्रवालशाखा पिष्टी १० ग्राम

सबको आपस में मिलाकर अर्जुनछाल क्वाथ की ७ भावनाएँ देकर २५० मि.ग्राम की गोली या कैप्सूल तैयार कर लें।

मात्रा : १–२ गोली या कैप सुबह–शाम अर्जुन क्षीरपाक/जल/दूध किसी एक से दें।

गुण : यह हृदय को शक्ति प्रदान करता है तथा उसकी रक्षा करता है। इसके सेवन से हार्ट अटैक, एन्जाइना पेन, कार्डिक न्यूरोसिस, टैकी कार्डिया आदि रोगों में लाभ होता है तथा हार्ट अटैक एवं एन्जाइना पेन से बचाव भी होता है। इसके सेवन से रोगी के सामान्य स्वास्थ्य में भी सुधार होता है। यह मानसिक तनाव को दूर कर मानसिक शान्ति प्रदान करता है। स्नायु दुर्बलता शेष पृष्ठ 11 पर

वेद मंत्रों में

ॐ य ईशे पशुपतिः पशूनाः, चतुष्पदामुत यो द्विपदाम्।
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु, रास्पोषा यजमानं सचन्ताम्।।
(अथर्व, कां. २ सू ३४ मं, १)

चार पैरों वाले गौ–अश्व आदि पशुओं का तथा दो पैर वाले मानव–दानव आदि पशुओं का भी वह शासक–स्वामी पशुपति है। वह समस्त चराचर विश्व का नियन्ता परमेश्वर है। वह भगवान यदि श्रद्धा भक्ति ध्यानादि के द्वारा स्वाधीन हो, अपने हृदय में प्रकट हो जाये तो मानव, ज्ञान यज्ञ लभ्य सर्वोत्तम शास्वत ब्रह्म धाम को प्राप्त कर सकते हैं और भगवान पशुपति महादेव की आराधना के द्वारा मोक्ष लाभ के साथ–साथ वह हिरण्यादि धन समृद्धि को भी प्राप्त कर लेते हैं। अर्थात् भगवान की भक्ति के द्वारा अभ्युदय एवं निःश्रेयस, भोग एवं मोक्ष दोनों की सिद्धि होती है।

ॐ ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये, वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु।
य आविवेशोषधीर्यो वनस्पतींस्, तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्।।
यः सेमे अन्तर्यो गोष्वन्तर, य आविष्टो वयस्सु यो मृगेषु।
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदः, तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्।। (अथर्व /२१/१-२)

समुद्रादि जलों के भीतर वाड़वादि रूप से, विस्तृत मेघ मण्डल में वैद्दितादि रूप से, मनुष्यादि के शरीरों में वैश्वानर रूप से एवं चन्द्रकान्त–सूर्यकान्तादि पाषाणों में शीतोष्णादि रूप से जो अग्नियां वर्तमान हैं एवं जो अग्नि इन ब्रीहि–यवादि रूप औषधियों में तथा आम्र–पिप्पलादि रूप वनस्पतियों में प्रविष्ट है, उन–जगत्पर विविध प्रकारों के अनुग्रहों के करने वाली अग्नियों में यह मेरी आहुति समर्पित होवे।

जो अग्नि सोमलता में अमृतमय रस के परिपाक के लिए प्रविष्ट है, जो अग्नि गौ–महिषादि पशुओं के भीतर दूध के परिपाक के लिए प्रविष्ट है, तथा जो अग्नि, पक्षियों में एवं मृगों में प्रविष्ट है और जो दो पैर वाले मनुष्यों के भीतर तथा चार पैर वाले अन्य प्राणियों के भीतर जठराग्नि रूप से प्रविष्ट है– उन सब अग्नियों में ये मेरी विविध प्रकार की पेय–भक्ष्य–भोज्यादिरूप आहुतियां समर्पित होवें।

ॐ हिरण्यपाणिं सवितरमिन्द्रं, बृहस्पति वरुणं मित्रमग्निम्।
विश्वान्देवानङ्गिरसो हवामहे, इमं क्रव्यादं शमयन्त्वग्निम्।।
(अथर्व ३/२१/८)

जिसका हिरण्य–सुवर्ण के समान मनोहर दर्शनीय हाथ है, या हित–रमणीय –सदुपदेशप्रद ज्ञान मुद्रायुक्त हाथ है, उस हिरण्यपाणि, जगत्प्रसूतिकर्ता, परमैश्वर्य सम्पन्न, बृहती वेदवाणी का पति, सर्वजन वरणीय, सर्वभूत सुहृत, अग्रगण्य–भगवान की आराधना के लिए हम आवाहन करते हैं। तथा विश्वात्मा भगवान की शक्ति एवं विभूति रूप समस्त देवों का तथा अंगीरस संज्ञा वाले ज्ञानभक्ति सम्पन्न निखिल महर्षियों की रक्षा के लिए एवं श्रेयोमार्ग की प्रगति के लिए आवाहन करते हैं। ये सब मिलकर इस मासंभक्षक दुष्ट कामाग्नि का शमन करें।

१८५७ की क्रान्ति के महानायक राव उमराव सिंह गुर्जर

राव उमराव सिंह गुर्जर दादरी भटनेर रियासत के राजा थे। इनका जन्म सन १८३२ में दादरी (उ.प्र.) के निकट ग्राम कटेहड़ा में राव किशन सिंह गुर्जर के पुत्र के रूप में हुआ था। सन १८५७ की जनक्रान्ति में राव रोशनसिंह उनके बेटे राव बिशन सिंह व उनके भतीजे राव उमराव सिंह का महत्त्वपूर्ण योगदान था। १० मई को मेरठ से १८५७ की जन–क्रान्ति की शुरूआत कोतवाल धनसिंह गुर्जर द्वारा हो चुकी थी। दादरी राजपरिवार से सम्बद्ध राव उमराव सिंह ''बरन'' के वृहत्तर दुःधर्ष योद्धा एवं ''बुलन्दशहर'' के बुलन्द संकल्पों के स्वप्न दृष्टा थे। दृढ़ इच्छाशक्ति, प्रखर बुद्धिचातुर्य एवं दूरदर्शी चिन्तन के कारण मुगल दरबार में उनका स्थान उनके सगे चाचा राजा रोशन सिंह से कहीं ऊपर था। आम जनता और गुर्जर समाज में उनकी पैठ दादरी राजपरिवार के राजा राव रोशनसिंह उनके पुत्रों राव बिशन सिंह व राव भगवंत सिंह से कहीं अधिक थी। इसी कारण समाज में उनकी गृहायता व मान्यता सर्वोपरि थी। १० मई को ही मेरठ के कोतवाल धनसिंह गुर्जर का क्रान्ति का संदेश मिलते ही राव उमराव सिंह ने बरन में क्रान्ति का बिगुल श्रीघोष बुलन्द कर बैरियों से भिड़ पड़े। फिर क्या था? उनके आह्वान पर...

दादरी, दनकौर, सिकन्द्राबाद, कासना और सूरजपुरा के चारों ओर बसे गुर्जर, गिरूआ और रांघड़ जातियों के गाँव में विद्रोह की लहर दावानल की तरह फैल गई। चूँकि विगत माह अरावली की उपत्यका में आनन्दपुर के स्थान पर सूर्य–कुण्ड के प्रांगण में सम्पन्न हुई सर्वखाप पंचायत के प्रचारकों ने उन्हें उद्वेलित, उत्तेजित और आक्रोशित करने में आग में घी डालने का काम कर रखा था। अतः उचित समय की बाट जोह रहे गुर्जर गिरुआ और रांघड़ राव उमराव सिंह की हाँक पर चारों ओर के ग्रामों एवं पुरवों से ठठ से ठठ चलकर दादरी पहुँच किले के प्रांगण में जुड़ने लगे। ११ मई की अपराहन आने वाली भीड़ लगभग ३०,००० सर्वखाप पंचायत का रूप ले लिया था। दादरी के किले में सर्वखाप पंचायत राव उमराव सिंह गुर्जर कठेहड़ा की अध्यक्षता में शुरू हुई, जिसमें प्रमुख रूप से राजा रावरोशन सिंह, राव बिशन सिंह, राव भगवंत सिंह दादरी, राव सुरजीत सिंह दनकौर, राव

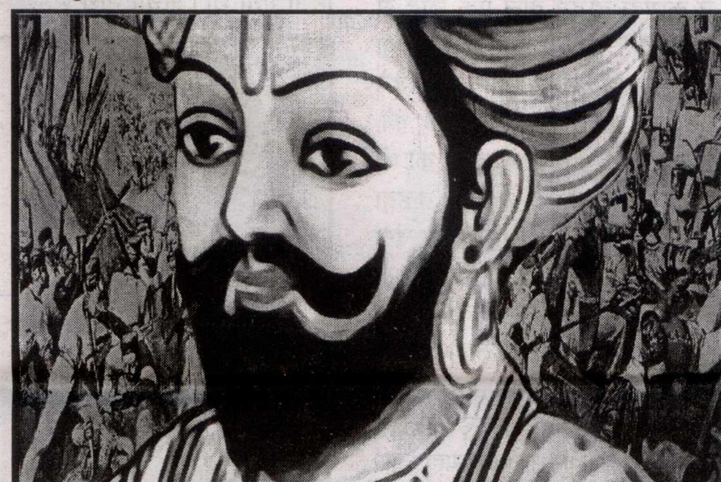

सेढू सिंह कठेहड़ा, इन्द्र सिंह व कान्हा सिंह अटटाह, दरियाव सिंह जुनेदपुर, नत्था सिंह अटटाह, रामबख्श सिंह गुनपुरा, लुहारली के दादा मजलिस, झण्डू सिंह नगला नैनसुख, इन्द्रसिंह गुठावली, मेहताब सिंह रवगुआबास, अहिमान सिंह बड़पुरा, मल्लिक सिंह नूब व रवाब वलीदाद खाँ मालागढ़ आदि क्रान्ति स्तम्भों ने भाग लिया। इसी प्रकार गिरुआ और रांघड़ जाति के लोगों ने भी भारी संख्या में भाग लिया, जिनके नाम शोध कार्य के मध्य मिल नहीं सके। पंचायत में अंग्रेजों को भारत से विदा करने को लेकर वाद–विवाद करने को लेकर वाद–विवाद होने लगे, योजनाओं पर विमर्श आने लगे।

कुल मिलाकर गहन मंथन चल रहा था। चारों ओर से गढ़ी में आए जाति सरदार मात्र श्रोता नहीं थे वे क्रान्तिकारी थे। वे मनोरंजन के लिए नहीं आए थे अपितु अंग्रेजी राज्य को ध्वस्त करने के उद्देश्य से यहाँ आए थे। उनके हृदयों में अंग्रेजों के विरूद्ध प्रतिशोध की पिपासा धध ाक रही थी। चूँकि उनके हृदयों में तो दादरी रियासत के जब्त कर लेने पर्यन्त से ही अंग्रेजी राज शूल की तरह चुभने लगा था। अतः सर्वखाप पंचायत में राजा राव उमराव सिंह बिशन सिंह, राव भगवंत सिंह और राव सुरजीत सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजी सरकार को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई गई।

तत्कालीन राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत भारत–पुत्र उमराव सिंह गुर्जर ने आसपास के ग्रामीणों को प्रेरित कर १२ मई १८५७ को सिकन्द्राबाद तहसील पर धावा बोल दिया। वहाँ के हथियार और खजानों को अपने अधिकार में कर लिया। इसकी सूचना मिलते ही बुलन्दशहर से सिटी मजिस्ट्रेट सैनिक बल सिकन्द्राबाद आ ध ामका। ७ दिन तक क्रान्तिकारी सेना अंग्रेज सेना से टक्कर लेती रही। अंत में १६ मई को सशस्त्र सेना के सामने क्रान्तिकारी वीरों को हथियार डालने पड़े। ४६ लोगों को बंदी बनाया गया। उमराव सिंह गुर्जस्र बच निकले। इस क्रान्तिकारी सेना में गुर्जर समुदाय की मुख्य भूमिका होने के कारण उन्हें ब्रिटिश सत्ता का कोपभाजन होना पड़ा। उमराव सिंह गुर्जर अपने दल के साथ २१ मई को बुलन्दशहर पहुँचे एवं जिला कारागार पर धावा बोलकर अपने सभी राजबंदियों को छुड़ा लिया। बुलन्दशहर से अंग्रेजी शासन समाप्त होने के बिंदु पर था लेकिन बाहर से सेना की मदद आ जाने से यह संभव नहीं हो सका।

हिंडन नदी के तट पर ३० व ३१ मई को क्रान्तिकारी सेना और अंग्रेजी सेना के बीच एक ऐतिहासिक भीषण युद्ध हुआ जिसका कमान क्रान्तिनायक ध ानसिंह गुर्जर, राव उमराव सिंह *गुर्जर, राव रोशन सिंह गुर्जर* इस युद्ध में अंग्रेजों को मुँह की खानी पड़ी थी। २६ सितम्बर, १८५७ को कासना–सूरजपुर के बीच उमराव सिंह की अंग्रेजी सेना से भारी टक्कर हुई। लेकिन दिल्ली के पतन के कारण क्रांतिकारी सेना का उत्साह भंग हो चुका था। भारी जनहानि के बाद क्रांतिकारी सेना ने पराजय स्वीकार कर ली। उमराव सिंह गुर्जर को गिरफ्तार कर लिया गया। इस जनक्रान्ति के विफल हो जाने पर बुलंदशहर के कालेआम पर बहुत से गुर्जर क्रान्तिवीरों के साथ राजा राव उमराव सिंह भाटी, राव रोशन सिंह भाटी, राव बिशन सिंह भाटी को बुलन्दशहर में कालेआम के चौराहे पर हाथी के पैर से कुचलकर फाँसी पर लटका दिया गया। **साभार-सत्यचक्र**

क्या शिवाजी छत्रपति नहीं मात्र ''पहाड़ी चूहा'' थे?

✍ हरिकृष्ण निगम

क्या हमें विश्वास होगा कि केन्द्रीय विद्यालयों के अनुमोदित पाठ्यक्रमों या हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में ऐसी सामग्री लाखों विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से पढ़ने को प्रस्तुत की जा रही जो हमें चकित कर सकती है। यदि आज सन् २०१७ या २०१८ में भी उन्हें चाहे वे मुद्रित पुस्तक के रूप में हों या कम्प्यूटरकृत–डिजिटाइज–फारमेट में हो उसे अत्यन्त दिग्भ्रमित व असत्य पर आधारित कहा जा सकता है। ऐसा एक आलेख छत्रपति शिवाजी के ऊपर जिसका शीर्षक 'पहाड़ी चूहा' पढ़ने को मिला है जिसका लेखन रामधारी सिंह 'दिनकर'ने किया है। यद्यपि ये वही राष्ट्रकवि हैं पर उनकी यह रचना स्वतंत्रता मिलने के पहले उनके द्वार लिखी गई थी जब एक समय अंग्रेज व मुस्लिम लेखक शिवाजी को अपमानित करने के मन्तव्य से उनके ऊपर अनाप–शनाप लांछित करने वाले अर्ध सत्य जड़ने में रस लेकर लिखते थे। आज हम सब जानते हैं कि कुटिल या चालक शत्रु से बदला लेने के लिए शिवाजी को गुरिल्ला युद्ध के प्रवर्तक के रूप में शिवाजी को पहला शौर्यपूर्ण योद्धा माना जाता है। इस कारण उनको अंग्रेजों व मुस्लिम इतिहासकारों द्वारा 'पहाड़ी चूहा' कहना आज के युग में हमारे द्वरा असंगत व उनके ऊपर लांछन मढ़ने वाला ही कहा जा सकता है। उस समय का दशकों पुराना लेख आज पाठ्यक्रम के लिए छापना जब न उन्होंने संस्कृति के चार अध याय अथवा रेणुका या हुंकार जैसी काव्य पुस्तकें नहीं लिखी थी इसलिए 'पहाड़ी चूहा' जैसे उनके आलेख अप्रासंगिक व भ्रमित करने वाले हैं जिन्हें पाठ्यपुस्तकों से हटाना हमारा एक राष्ट्रीय दायित्व ही नहीं ऐसे देशद्रोही लोगों को दण्ड देना भी हमारी जिम्मेदरी बनती है। मुगलों व उनके सिपाह सलारों के आक्रमणों के तात्कालिक परिप्रेक्ष्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। चाहे नौवी कक्षा की हिन्दी व्याकरण अथवा लेखन व संयोजन की श्रृंखला की प्रस्तावित पाठ्यपुस्तक हो वे महाराष्ट्र राज्य द्वारा स्वीकृत हो अथवा देश भर में आई. सी. एस. ई. के लिए व्याकरण अध्ययन के लिए अनिवार्य बना दी गई हो *उस सारी श्रृंखला* में उद्घृत रचनायें उनकी वस्तु विषय को चयन मे लापरवाही ही नहीं बल्कि आपराधिक धोखाधड़ी भी की गई हैं स्वतंत्रता के पहले की उनकी रचनायें अंग्रेजी शिक्षा के संवाहकों की हिन्दी विद्वेषी और 'बांटों व राज्य करो' की नीति साफ आ सकती हैं। इसी तरह 'जनरल साई' विषयकों की स्टैन्डर्ड –७ की केन्द्रीय विद्यालयों के लिए अनुमोदित पाठ्य पुस्तक में एक साथ दर्जनों विषयों को समान्वित किया गया है पर उसमें लगता है कि सेकुलर, वामपंथी व हिन्दू विद्वेषी हमले को बरकरार रखा गया है। इसके २०० से अध िाक पृष्ठ छात्रों को हिन्दू विरोधी तटस्थता बनाए रखने के लिए पर्याप्त है। आज केन्द्रीय स्कूलों, आई सी एस ई या सी बी सी ई के हिन्दी पाठ्यक्रमों की कोई भी स्वीकृत पुस्तक देखें। उसमें हिन्दू धर्म के कट्टरवाद, कथित प्रपंच या पलायनवाद से सम्बन्धित आलेख ढूंढकर चाहे व कुछ प्रसिद्ध लेखकों जैसे रामधारी सिंह दिनकर, शरतचन्द्र, प्रेमचंद व रबीन्द्र नाथ ठाकुर की ५० वर्षो पहले की रचनाएं हो जब भारत के परतंत्र होने के समय तात्कालिक उपलब्ध अंग्रेज व इस्लामी लेखकों उपलब्ध संघ पर आधारित था, संकलन में रखी गई हैं। वे इतनी भ्रष्ट व अर्धसत्य पर आधारित है कि सन् २०१७ में उनका उपयोग हमारे दृष्टि कोण का मखौल उड़ाते हैं। लगता है कि इस साजिश को व्यवस्थित रूप से उजागर करने के लिए एक उच्च स्तरीय सजग आयोग का गठन अपेक्षित हैं।

चन्द्रशेखर आजाद बलिदान दिवस (२७ फरवरी) पर विशेष

मुन्ना कुमार शर्मा

पण्डित चन्द्रशेखर आजाद (२३ जुलाई १९०६–२७ फरवरी) ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के स्वतंत्रता सेनानी थे। वे पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल व सरदार भगत सिंह सरीखे क्रान्तिकारियों के अनन्यतम साथियों में से थे। सन् १९२२ में गाँधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन को अचानक बन्द कर देने के कारण उनकी विचारधारा में बदलाव आया और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़ कर हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन के सक्रिय सदस्य बन गये। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में पहले ९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड किया और फरार हो गये। इसके पश्चात् सन् १९२७ में बिस्मिल के साथ ४ प्रमुख साथियों के बलिदान के बाद उन्होंने उत्तर भारत की सभी क्रान्तिकारी पार्टियों को मिलाकर एक करते हुए हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसियेशन का गठन किया तथा भगत सिंह के साथ लाहौर में लाला लाजपत राय की मौत का बदला सॉण्डर्स का हत्या करके लिया एवं दिल्ली पहुँच कर असेम्बली बम काण्ड को अंजाम दिया।

जन्म तथा प्रारम्भिक जीवन : चन्द्रशेखर आजाद का जन्म भाबरा गाँव (अब चन्द्रशेखर आजादनगर) (वर्तमान अलीराजपुर जिला) में २३ जुलाई सन् १९०६ को हुआ था। उनके पूर्वज बदरका (वर्तमान उन्नाव जिला) से थे। आजाद के पिता पण्डित सीताराम तिवारी संवत् १९५६ में अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका को छोड़कर पहले कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारम्भिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता अतः एव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष बाण चलाये। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आजाद का मन अब देश को आजाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सम्पर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ के नाम से जाना जाता था।

पहली घटना : १९१९ में हुए अमृतसर के जलियांवाला बाग नरसंहार ने देश के नवयुवकों को उद्वेलित कर दिया। चन्द्रशेखर उस समय पढाई कर रहे थे। जब गांधीजी ने सन् १९२१ में असहयोग आन्दोलन का फरमान जारी किया तो वह आग ज्वालामुखी बनकर फट पड़ी और तमाम अन्य छात्रों की भाँति चन्द्रशेखर भी सडकों पर उतर आये। अपने विद्यालय के छात्रों के जत्थे के साथ इस आन्दोलन में भाग लेने पर वे पहली बार गिरफ्तार हुए और उन्हें १५ बेंतों की सजा मिली। इस घटना का उल्लेख पं०जवाहरलाल नेहरू ने कायदा तोड़ने वाले एक छोटे से लड़के की कहानी के रूप में किया है– ऐसे ही कायदे (कानून) तोड़ने के लिये एक छोटे से लड़के को, जिसकी उम्र १५ या १६ साल की थी और जो अपने को आजाद कहता था, बेंत की सजा दी गयी। वह नंगा किया गया और बेंत की टिकटी से बाँध दिया गया। जैसे–जैसे बेंत उस पर पड़ते थे और उसकी चमड़ी उधेड़ डालती थी, वह भारत माता की जय! चिल्लाता था। हर बेंत के साथ वह लड़का तब तक यही नारा लगाता रहा, जब तक वह बेहोश न हो गया। बाद में वही लड़का उत्तर भारत के आतंककारी कार्यों के दल का एक बड़ा नेता बना।

क्रान्तिकारी संगठन : असहयोग आन्दोलन के दौरान जब फरवरी १९२२ में चौरी चौरा की घटना के पश्चात् बिना किसे से पूछे गाँधीजी ने आन्दोलन वापस ले लिया तो देश के तमाम नवयुवकों की तरह आजाद का भी कांग्रेस से मोह भंग हो गया और पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल योगेशचन्द्र चटर्जी ने १९२४ में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों को लेकर एक दल हिन्दुस्तानी प्रजातान्त्रिक संघ (एच० आर० ए०) का गठन किया। चन्द्रशेखर आजाद भी इस दल में शामिल हो गये। इस संगठन ने जब गाँव के अमीर घरों में डकैतियाँ डालीं, ताकि दल के लिए धन जुटाने की व्यवस्था हो सके तो यह तय किया गया कि किसी भी औरत के ऊपर हाथ नहीं उठाया जाएगा। एक गाँव में राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में डाली गई डकैती में जब एक औरत ने आजाद का पिस्तौल छीन लिया तो अपने बलशाली शरीर के बावजूद आजाद ने अपने उसूलों के कारण उस पर हाथ नहीं उठाया। इस डकैती में क्रान्तिकारी दल के आठ सदस्यों पर, जिसमें आजाद और बिस्मिल भी शामिल थे, पूरे गाँव ने हमला कर दिया। बिस्मिल ने मकान के अन्दर घुसकर उस औरत के कसकर चाँटा मारा, पिस्तौल वापस छीनी और आजाद को डाँटते हुए खींचकर बाहर लाये। इसके बाद दल ने केवल सरकारी प्रतिष्ठानों को ही लूटने का फैसला किया। १ जनवरी १९२५ को दल ने समूचे हिन्दुस्तान में अपना बहुचर्चित पर्चा द रिवोल्यूशनरी (क्रान्तिकारी) बाँटा जिसमें दल की नीतियों का खुलासा किया गया था। इस पैम्फलेट में सशस्त्र क्रान्ति की चर्चा की गयी थी। इश्तहार के लेखक के रूप में विजयसिंह का छद्म नाम दिया गया था। शचींद्रनाथ सान्याल

इस पर्चे को बंगाल में पोस्ट करने जा रहे थे तभी पुलिस ने उन्हें बाँकुरा में गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। एच० आर० ए० के गठन के अवसर से ही इन तीनों प्रमुख नेताओं – बिस्मिल, सान्याल और चटर्जी में इस संगठन के उद्देश्यों को लेकर मतभेद था।

इस संघ की नीतियों के अनुसार ९ अगस्त १९२५ को काकोरी काण्ड को अंजाम दिया गया। जब शाहजहाँपुर में इस योजना के बारे में चर्चा करने के लिये मीटिंग बुलायी गयी तो दल के एक मात्र सदस्य अशफाक उल्ला खाँ ने इसका विरोध किया था। उनका तर्क था कि इससे प्रशासन उनके दल को जड़ से उखाड़ने पर तुल जायेगा और ऐसा ही हुआ भी। अंग्रेज चन्द्रशेखर आजाद को तो पकड़ नहीं सके पर अन्य सर्वोच्च कार्यकर्ताओं– पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ एवं ठाकुररोशन सिंह को १९ दिसम्बर १९२७ तथा उससे २ दिन पूर्व राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को १७ दिसम्बर १९२७ को फाँसी पर लटकाकर मार दिया गया। सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं के पकडे जाने से इस मुकदमे के दौरान दल प्रायः निष्क्रिय ही रहा। एकाध बार बिस्मिल तथा योगेश चटर्जी आदि क्रान्तिकारियों को छुडाने की योजना भी बनी जिसमें आजाद के अलावा भगत सिंह भी शामिल थे लेकिन किसी कारण वश यह योजना पूरी न हो सकी। ४ क्रान्तिकारियों को फाँसी और १६ को कड़ी कैद की सजा के बाद चन्द्रशेखर आजाद ने उत्तर भारत के सभी क्रान्तिकारियों को एकत्र कर ८ सितम्बर १९२८ को दिल्ली के फीरोज शाह कोटला मैदान में एक गुप्त सभा का आयोजन किया। इसी सभा में भगत सिंह को दल का प्रचार–प्रमुख बनाया गया। इसी सभा में यह भी तय किया गया कि सभी क्रान्तिकारी दलों को अपने–अपने उद्देश्य इस नयी पार्टी में विलय कर लेने चाहिये। पर्याप्त विचार–विमर्श के पश्चात् एकमत से समाजवाद को दल के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल घोषित करते हुए हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसियेशन का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेशन रखा गया। चन्द्रशेखर आजाद ने सेना–प्रमुख (कमाण्डर इन चीफ) का दायित्व संभाला। इस दल के गठन के पश्चात् एक नया लक्ष्य निर्धारित किया गया हमारी लड़ाई आखिरी फैसला होने तक जारी रहेगी और वह फैसला है जीत या मौत।

चरम सक्रिय : आजाद के प्रशंसकों में पण्डित मोतीलाल नेहरू, पुरुषोत्तमदास टंडन का नाम शुमार था। जवाहरलाल नेहरू से आजाद की भेंट आनन्द भवन में हुई थी उसका जिक्र नेहरू ने अपनी आत्मकथा में फासीवादी मनोवृत्ति के रूप में किया है। इसकी कठोर आलोचना मन्मथनाथ गुप्त ने अपने लेखन में की है। कुछ लोगों का ऐसा भी कहना है कि नेहरू ने आजाद को दल के सदस्यों को समाजवाद के प्रशिक्षण हेतु रूस भेजने के लिये एक हजार रुपये दिये थे जिनमें से ४४८ रूपये आजाद की शहादत के वक्त उनके वस्त्रों में मिले थे। सम्भवतः सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय तथा यशपाल का रूस जाना तय हुआ था पर १९२८–३१ के बीच शहादत का ऐसा सिलसिला चला कि दल लगभग बिखर सा गया। जबकि यह बात सच नहीं है। चन्द्रशेखर आजाद की इच्छा के विरुद्ध जब भगत सिंह एसेम्बली में बम फेंकने गये तो आजाद पर दल की पूरी जिम्मेवारी आ गयी। साण्डर्स वध में भी उन्होंने भगत सिंह का साथ दिया और बाद में उन्हें छुड़ाने की पूरी कोशिश भी की। आजाद की सलाह के खिलाफ जाकर यशपाल ने २३ दिसम्बर १९२९ को दिल्ली के नजदीक वायसराय की गाड़ी पर बम फेंका तो इससे आजाद क्षुब्ध थे क्योंकि इसमें वायसराय तो बच गया था पर कुछ और कर्मचारी मारे गए थे। आजाद को २८ मई १९३० को भगवती चरण वोहरा की बम–परीक्षण में हुई शहादत से भी गहरा आघात लगा था। इसके कारण भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना भी खटाई में पड़ गयी थी। भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु की फाँसी रुकवाने के लिए आजाद ने दुर्गा भाभी को गाँधीजी के पास भेजा जहाँ से उन्हें कोरा जवाब दे दिया गया था। आजाद ने अपने बलबूते पर झाँसी और कानपुर में अपने अड्डे बना लिये थे। झाँसी में मास्टर रुद्र नारायण, सदाशिव मलकापुरकर, भगवानदास माहौर तथा विश्वनाथ वैशम्पायन थे जबकि कानपुर में पण्डित शालिग्राम शुक्ल सक्रिय थे। शालिग्राम शुक्ल को १ दिसम्बर १९३० को पुलिस ने आजाद से एक पार्क में मिलने जाते वक्त शहीद कर दिया था।

बलिदान : एच०एस०आर०ए० द्वारा किये गये साण्डर्स–वध और दिल्ली एसेम्बली बम काण्ड में फाँसी की सजा पाये तीन अभियुक्तों– भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव ने अपील करने से साफ मना कर ही दिया था। अन्य सजायाफ्ता अभियुक्तों में से सिर्फ ३ ने ही प्रिवी कौन्सिल में अपील की। ११ फरवरी १९३१ को लन्दन की प्रिवी कौन्सिल में अपील की सुनवाई हुई। इन अभियुक्तों की ओर से एडवोकेट प्रिन्ट ने बहस की अनुमति माँगी थी किन्तु उन्हें अनुमति नहीं मिली और बहस सुने बिना ही अपील खारिज कर दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद ने मृत्यु दण्ड पाये तीनों प्रमुख क्रान्तिकारियों की सजा कम कराने का काफी प्रयास किया। वे उत्तर प्रदेश की हरदोई जेल में जाकर गणेशशंकर विद्यार्थी से मिले। विद्यार्थी से परामर्श कर वे इलाहाबाद गये और जवाहरलाल नेहरू से उनके निवास आनन्द भवन में भेंट की। आजाद ने पण्डित नेहरू से यह आग्रह किया कि वे गांधी जी पर लॉर्ड इरविन से इन तीनों की फाँसी को उम्र–कैद में बदलवाने के लिये जोर डालें। नेहरू जी ने जब आजाद की बात नहीं मानी तो आजाद ने उनसे काफी देर तक बहस भी की। इस पर नेहरू जी ने क्रोधित होकर आजाद को तत्काल वहाँ से चले जाने को कहा तो वे अपने तकियाकलाम स्साला के साथ भुनभुनाते हुए ड्राइँग रूम से बाहर आये और अपनी साइकिल पर बैठकर अल्फ्रेड पार्क की ओर चले गये। अल्फ्रेड पार्क में अपने एक मित्र सुखदेव राज से मन्त्रणा कर ही रहे थे तभी सी०आई०डी० का एस०एस०पी० नॉट बाबर जीप से वहाँ आ पहुँचा। उसके पीछे–पीछे भारी संख्या में कर्नलगंज थाने से पुलिस भी आ गयी। दोनों ओर से हुई भयंकर गोलीबारी में आजाद को वीरगति प्राप्त हुई। यह दुखद घटना २७ फरवरी १९३१ के दिन घटित हुई और हमेशा के

शेष पृष्ठ 11 पर

२६ फरवरी पुण्य तिथि पर विशेष

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के अंतिम दिन

साभार-जनज्ञान

वीर सावरकर के अंतिम दिनों का विवरण प्रस्तुत है उनके सचिव तथा प्रसिद्ध हिन्दुसभाई कार्यकर्ता श्री अप्पा कासार द्वारा

२० अक्तूबर १६६२ के दिन चीनी आक्रमण के समाचार को सुनकर वीरसावरकर दुःखी होकर बोले–**''सैकड़ों वर्षों के दीर्घ प्रयत्न के बाद मिली हुई स्वतंत्रता को ये शासक अपने दोषपूर्ण राजनीति और अव्यवहारी सिद्धान्तों के कारण फिर खो बैठेंगे।''** पर १६६५ में, श्री शास्त्री जी ने समय पर ही सावधान होकर कश्मीर से लेकर कच्छ तक सैनिकों

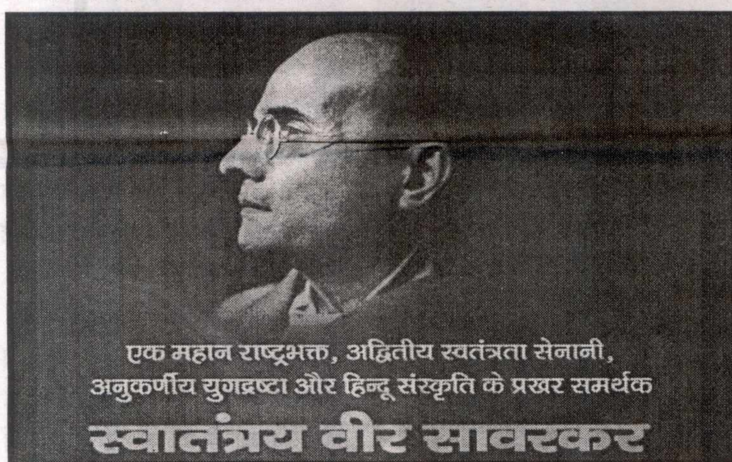

की एक अभेद्य दीवार खड़ी करके भारतीय सेना को आगे बढ़ने का जो आदेश दिया और भारतीय वीरों ने लाहौर तक मंजिल तय कर ली और पाक सेना, पाकटैंक और उनके विमानों को चूर–चूर करके **२२ अगस्त से २२ सितम्बर तक जो अद्भुत पराक्रम दिखाया, उस विजय का समाचार सुनते ही वीरसावरकर आनन्द में विभोर हो गए।** उनके उस आनन्द का वर्णन हम किन शब्दों में करें?

ताशकन्द करार के बाद उदासीनता

उस समय भी रुग्ण शय्या पर पड़े हुए वीर सावरकर ने कहा कि– **''यह दिन देखकर मुझे जो आनन्द होता है, उसे शब्दों में मैं कैसे व्यक्त करूं?''** वे बीमार थे फिर भी पाक सेना के पीछे हटने और उनके भयंकर विनाश का समाचार जोर–जोर से पढ़ते थे। नक्शे पर उंगली रख कर वे कहते कि–**''इस जगह शत्रु जंगल में फँस जायेगा, जल्दी करो, एक बार लाहौर हाथ में आ जाये, तो फिर रावलपिंडी क्या काबुल तक हम मंजिल मार सकते हैं।''** वीर सावरकर का यह आवेश किसी सम्राट के आवेश के समान था। पर शस्त्र–संधि की भाषा के शुरू होते ही सावरकर बोले– **''शूर जवानों ने जो प्राप्त किया उसे तथाकथित नेता गंवा बैठेंगे।''** आखिरकार यह शस्त्र–संधि हुई। **ताशकन्द वार्ता के शुरू होने के साथ ही सावरकर जी का मन उदासीनता से भर गया। इसी उदासीनता के कारण उन्होंने आत्मसमर्पण भी कर दिया।**

चाय में दवा देते हो, तो चाय भी नहीं पीऊँगा।

२६ जनवरी, १६६६ के बाद वीर सावरकर का स्वास्थ्य धीरे–धीरे क्षीण होने लगा। डॉक्टर चिन्ता में पड़ गए। स्वातन्त्र्य वीर दवा नहीं लेते, तो क्या करें? दूसरे किसी उपाय से यदि दवा पेट में जाये, तो अत्यन्त उत्तम होगा, यह सोचकर **२६ से ३१ ता. तक चाय में दवा दी गई।** इससे स्वातन्त्र्य वीर को संदेह हो गया। एक दिन उन्होंने पूछ ही लिया कि **क्या चाय का चूरा बदल दिया है?** पर उत्तर नकारात्मक ही मिला। **वस्तुतः पाचनशक्ति की क्षीणता को छोड़कर और कोई विकार उनमें नहीं था।** सभी ज्ञानेन्द्रियां उत्तम थीं। अतः उनके मन में यह संदेह पैदा हो गया कि डॉक्टर उनसे कुछ छिपा रहे हैं। तर्कनिष्ठ और बुद्धिवादी मनुष्य को फंसाना बड़ा कठिन काम है। वही बात यहां भी हुई।

३ फरवरी से स्वातन्त्र्य-वीर ने चाय पीनी भी बन्द कर दी। केवल थोड़ा–सा पानी पीना, अखबार पढ़ना या सुना, रोज की तरह दाढ़ी बनाना, शरीर पोंछवा लेना, आई डाक देखना, अपने सचिव को उत्तर लिखवाना, और थोड़ी बहुत चर्चा करना यह उनका दिनक्रम था। आने जाने वालों की खोज खबर लेना वे कभी नहीं भूलते थे। उनकी बीमारी का समाचार रेडियो और अखबार में आने से पत्रों ओर तारों की झड़ी सी लग गई, जो दिनों–दिन बढ़ती ही चली गई। इन सबका उत्तर देना भी कठिन होने लगा। दर्शकों की भी भीड़ इतनी होने लगी कि सावरकर सदन में जगह की कमी महसूस होने लगी।

''प्रभा से कह दो, कि मैं सबेरे उससे मिलूगा।''

स्वातन्त्र्य वीर ने पानी भी पीना बन्द कर दिया, अतः अंतिम उपाय सोचकर **सौ. प्रभा चिपलूणकर (पुत्री) और श्री माधवराव चिपलूणकर (दामाद) को दिल्ली से बुला लिया।** सौ. प्रभाताई और श्री माधवराव आए। सामान के रखने की सब व्यवस्था होने के बाद तात्याराव बोले–कि **''प्रभा से कह दो कि मैं उससे सबेरे मिलूगां''** हम सब को आशा तो यह थी कि वे सैकड़ों मील से प्रवास करके आने वाले अपने दामाद एवं पुत्री से तत्काल ही मिलेंगे, **पर यह देखकर हमें आश्चर्य ही हुआ। अपनी पुत्री से तत्काल न मिलने का कारण सम्भवतः यही होगा कि कहीं अपने पिता के क्षीण स्वास्थ्य को देखकर बेटी के हृदय को धक्का न पहुंचे।**

पूछ-ताछ वह भी बाग के बारे में

दूसरे दिन सबेरे सौ. प्रभा चाय का कप हाथ में लेकर स्वातन्त्र्य–वीर के पास गई और बोली– ''तात्या! तुम मेरे साथ एक प्याली चाय पी लो।'' सुनकर तात्याराव बोले, **''प्रभे! तू आ गई, बस मुझे सब कुछ मिल गया, अब तु मुझे इस मोह में न डाल।''** उनके इस कथन से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपने जाने की दिशा पहले से ही निश्चित कर ली थी। **बाद में उन्होंने अपनी पुत्री और नातिन माधुरी से दिल्ली में लगाए गए बाग, उसमें लगाए पौधे, बेल आदियों की पूछताछ करनी शुरू कर दी।** थी तो वे कवि–हृदय ही। जिन्होंने अपनी कल्पना से **गोमांतक काव्य को सजा दिया, कमला को अमर कर दिया और भी अनेक अमर काव्य रचे,** उन महाकवि का रुग्णशय्या पर होते हुए भी वृक्ष, लता, पौधे आदि के बारे पूछताछ करना क्या स्वाभाविक नहीं है?

डॉक्टरों का हृदय भर आया

स्वातन्त्र्य वीर की बीमारी जैसे–जैसे बढ़ती गई, वैसे–वैसे लोगों की जिज्ञासा भी बढ़ती गई। **डॉक्टरों का मंडल अपने आप ही बन गया। सभी अपने-अपने उपाय करने लगे और किसी भी तरह उन्हें दवा देने की कोशिश करने लगे, पर सब व्यर्थ।** अब सभी उनके हमेशा के धन्वन्तरि डॉ. साठे (भू.पू. उपकुलपति, बम्बई विश्वविद्यालय) का रास्ता देखने लगे। डॉ. साठे कहीं बम्बई से बाहर गए हुए थे। अन्त में एक दिन डॉ. साठे आये, उन्होंने तात्याराव की परीक्षा की। **परीक्षा के बाद तात्याराव क्षीण, पर दृढ़ स्वर में बोले-''साठे, अब औषध उपचार की कोई आवश्यकता नहीं है।** तुम मेरे स्नेही और अनेक वर्षो से मेरे चिकित्सक रहे हो। अतः मेरी बात सुनो। आज तक मैं तुम्हारी सब बातें मानता आया हूं। **अब मेरी अन्तिम बात सुन लो। मुझे कोई ऐसी दवा दो कि जिसके बाद मुझे फिर न बोलना पड़े।''**

डॉ. साठे बाले– **''मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ!** मैं दवा न देने की कोशिश करूंगा।'' डॉ. साठे के सहकारी, घर के सदस्य, तात्याराव के स्नेही आदि सब बाहर बैठे थे। डॉ. साठे बाहर निकले और बोले कि **''अब उन्हें कोई दवा मत दो। वे लेंगे भी नहीं। पानी खूब पिलाओं। अब उन्हें उनकी इच्छा पर ही रहने दो।''**

भावुकों की भावना

तात्याराव के स्वास्थ्य की क्षीणता का समाचार फैलते ही **श्री जगदगुरु शंकराचार्य द्वारकापीठ आदि तथा बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी चिन्तातुर होकर सावरकर-सदन की ओर आते थे।**

''सावरकर जी के दर्शन हो सकेंगे?'' ''नहीं।'' ''तो फिर दूर से ही उनके दर्शन कर लेने दीजिए।'' ''व भी असम्भव है।'' यह उत्तर सुनकर सभी उदास चेहरे से वापस लौट जाते। कुछ भावुक तो सावरकर–सदन की धूल अपने माथे पर चढ़ा कर ही अपने आपको कृत–कृत्य मान लेते थे।

सम्पूर्ण गीता बोलने वाली बालिका

१८ फरवरी को सबेरे एक गुजराती गृहस्थ ने आकर मुझसे पूछा कि ''वीर जी का दर्शन मिलेगा?'' मैंने ''नहीं–में उत्तर दिया। उनके साथ एक छः वर्ष की बालिका थी। उसकी ओर इशारा करते हुए उस गृहस्थ ने पूछा–**''इसे तो दर्शन मिल सकेगा?''** मैंने कहा–वीर सावरकर जी की नातिन भी तभी अन्दर जाती है, जब वे बुलाते हैं। डॉक्टरों ने मना किया है। तब वे बोले–''इस लड़की को सारी गीता याद है। इतना ही नहीं, कोई क्रमांश कहिए, यह वह श्लोक सुना देगी। गीता पर प्रवचन भी करती है। उपनिषद् के वचन भी याद हैं। इससे गीता पाठ करवा लो, उससे स्वातन्त्र्यवीर को भी शान्ति मिलेगी।'' यह सुनते ही मेरा धार्मिक मन जागृत हो गया। उस दिन महाशिवरात्री थी।

''सम्भव है शंकर स्वयं इसी रूप में आये हों। शंकर को भी इस वीर पुरुष के दर्शन करके धन्य होने को इच्छा हो गई हो'' इस कल्पना के मन में आते ही उन्हें अन्दर बैठने के लिए कह कर उसे १२वीं अध्याय का एक श्लोक सुनाने के लिए कहा। कहने के साथ ही उसके मुँह से श्लोक निकलने शुरू हो गए। उन श्लोकों के उसने गुजराती में अर्थ भी बताये। फिर मैं सब लोगों को बुला लाया। सभी फरमाइश करने लगे और वह लड़की शान्ति से सबकी फरमाइशें पूरी करती जाती थी। सभी आश्चर्य–चकित रह गए। मैंने सौ. प्रभाताई से उस बालिका को तात्याराव के कमरे में ले जाने के लिए कहा। सब ऊपर गए। तात्याराव आँखें बन्द किए पड़े हुए थे। इसलिए दूर से ही उस लड़की को बता दिया कि **''देखो वे हैं सावरकर!''** उस बालिका ने हाथ जोड़े और नमस्कार करके उछलती हुई अपने पिता के पास आकर बोली–**''मैंने सावरकर जी को देख लिया है।''** यह कहते हुए उसे कितना आनन्द हुआ इसका वर्णन मैं कैसे करूँ।

स्वयंसेवकों को शाप

सभी एक विशेष भावना से स्वातन्त्र्यवीर के दर्शनार्थ आते थे। **''मैं अकेला हूं, केवल दर्शन करूंगा और चला जाऊंगा।''** ''ठीक है, पर आप जैसे कहते हैं उतना सरल नहीं है। वीर का स्वभाव ऐसा है कि भले ही तुम न बोलो, फिर वे तुमसे बोले बिना नहीं रहेंगे। क्या नाम है? कहाँ रहते हो? आदि सैकड़ों प्रश्न वे पूछेंगे। **तुम जैसे हजारों आयेंगे, पर बोलने वाले सावरकर अकेले। बताइये, उन्हें कितना कष्ट होगा।''** फिर भी जब वह नहीं जाता तो हमारे सामने समस्या आ खड़ी होती उसे दर्शन कैसे करायें। फिर दूसरा कहता–**''मैं काश्मीर से इतनी दूर चलकर आया हूं, इसका तो ख्याल करो।''** फिर तीसरा पूछता कि– ''रात में कब हैं?'' ''साधारणतया रात के १२ बजे वे नींद की गोली खाते हैं, तभी उन्हें नींद आती है। स्वाभाविक नींद उन्हें नहीं आती।'' तो **''फिर मैं ऐसा करूंगा, कि १२ के बाद आऊंगा और बिना आवाज किए उन्हें देखकर चला जाऊंगा।''** इसी तरह के दर्शकों से हमारा पाला पड़ता था। उनमें कुछ जबर्दस्त भी होते थे। एक दिन एक राजस्थानी सज्जन आए, पर जब उनसे दर्शन की मनाही कर दी गई, तो वे चिढ़ गए और बोले–**''आप सब लोग नरक में जाएंगे।''**

पुत्री से बातचीत

तात्याराव की आवाज दिनों दिन क्षीण होती जा रही थी। वे जोर से बोलने की कोशिश करते थे, पर ध्वनि स्पष्ट नहीं होती थी। उनके मुँह के पास कान ले जाना पड़ता था, तब कुछ अस्पष्ट–सी ध्वनि सुनायी देती थी। एक दिन वे सौ. प्रभा से बोले– **''प्रभे! देख, मैं इस प्रकार कितने दिन तक पड़ा रहूँगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। क्या कहा जा सकता है कि मैं चार दिन रहूंगा या चार महीने रहूंगा!''** तात्याराव की बात सुनकर प्रभाताई की आंखें भर आईं। यह देखकर तात्याराव बोले ''आंखें दोंछ। इस प्रकार धैर्य छोड़ने से कैसे काम चलेगा? तेरी माँ भी चली गई। उसको भी भूल ही गई न? जो जन्मता है, वह जाता

शेष पृष्ठ 10 पर

पुणे का शनिवारवाड़ा

रमेश जि. नेवसे

(शेष पिछले अंक का)

पूरे हिंदुस्तान में पुणे के शनिवारवाडे की शान और नाम था। इस वाडे के नाम से बड़े–बड़े राजा और सल्तनतें काँप उठते थे। जिस वाडे से पूरे हिंदुस्थान का राजपाट चलाया जाता था। उसकी रक्षा के लिए सैनिक और पहरेदारों का इंतजाम पेशवेकाल में किस तरह किया था ये भी पढ़ने लायक है।

सूर्य की पहली किरण से ही रात के पहरेदारों को छुट्टी मिलती थी। दिल्ली दरवाजे के लिये ५३ पहरेदार, गणेश दरवाजे के १० पहरेदार, वाडे में कुल महल के लिये २२० पहरेदार होते थे। उसमें से १०५ सुबह से दोपहर के एक बजे तक अपने काम में लगे रहते थे। उनमें से २१ चाफेरवण के महल में और ८४ पहरेदार अनेक छोटे मोठे महल में काम करते थे। दोपहर को उन्हें छुट्टी दी जाती थी। बाद में ११५ नये पहरेदार काम पर आते थे।

रात में अंदर और बाहर की रखवाली के लिये २३६ सैनिक शस्त्रसज्ज होकर अपने काम में लगे रहते थे। इस २३६ सैनिकों में से १२५ वाडे के बाहर रहते थे और बचे हुये अंदर पहरा देते थे। बाहर के सैनिकों में कुछ सैनिक घुड़सवार थे, इस हिसाब से कुल ५२२ सिपाहियों की पहरेदारी शनिवारवाडे के लिये हुआ करती थी।

वास्तु बनवाने के बाद हवा, बारिश, धूप, शत्रुओं के हमले इस कारण से उसकी कहीं ना कहीं टूट–फूट होती है। उसकी मरम्मत करना और उसका रखरखाव करना आवश्यक होता है। उसकी मरम्मत करने से वास्तु की आयु बढ़ती है। आश्चर्य की बात है कि शनिवारवाडे के अंदर जितने ही महल बनवाये थे वो इतने मजबूत थे कि उनकी मरम्मत के लिये पैसा खर्च नहीं करना पड़ा था। लेकिन इन वास्तु को आग लगने के कारण क्षतिग्रस्त हो जाने का दुख झेलना पड़ा था।

शनिवारवाडे के अंदर के महल आवश्यकतानुसार बनवाये गये थे। दुर्भाग्य की बात है कि जैसे जरूरत के हिसाब से महल बनवाये गये वैसे ही वे महल, मकान नेस्तनाबूत होते गये।

७ जून १७६१ इस्वी में शनिवारवाडे में सवाई माधवराव के वक्त बनवाये गये ७ मंजली वाले महल के ऊपरी पाँच मंजिले आग लगने से भस्म हुई। बड़ी मेहनत से नीचे के दो मंजिले बचाये गये।

दूसरी अग्निकांड की दुर्घटना इस्वी १८०८ में जवाहरखाना महल में लगी थी। इस महल में अन्य राजा महाराजाओं के साथ...परकीय सत्ताओं के साथ किए गए समझौते, करारनामे और असली जवाहरात रखे थे। अनेक सिद्धहस्त चित्रकारों के हाथों

बनवायी गयी अमूल्य तस्वीरें थी। वह सब जलकर राख हो गयीं। अनेक कागजात पानी के कारण भीग गये। उस वक्त पुणे में पेशवा के सेनापति बापू गोखले ने आग बुझाने का साधन बनवाया था। उसकी सहायता से यह आग बुझायी गयी थी।

२४ फरवरी १८१२ में शनिवारवाडे में तीसरी आग लगी। इसमें सातखणी नामक महल की दो मंजिलें जलकर राख हुई। साथ में एक कोठी और दूसरे बाजीराव ने अपनी पसंदीदा औरतों के श्रृंगार हेतु बनवायी थी–यह 'अस्मान महल' पूरा जलकर राख हो गया।

१६ सितम्बर १८१३ के दिन दूसरे बाजीराव ने अपने लिये नया महल बनवाया था। वह महल आग लगने से जलकर राख हो गया।

पाँचवी और आखिरी आग अंग्रेजों के हाथों पेशवाई डूबने के बाद २१ फरवरी १८२८ के दिन लगी। यह अग्निकांड सबसे भयानक था। पूरे आठ दिन तक शनिवारवाडे के अंदर जितने महल थे वो एक के बाद एक जल रहे थे। इस आग में सिर्फ नानासाहब पेशवे का महल और नगारखाना बचा। बाकी सारे महल जलकर राख होकर ढेर हो गये। ये सारे महल एक के बाद एक करके आठ दिन तक जल रहे थे। बाद में पंद्रह दिन तक आहिस्ता–आहिस्ता आग महलों को खाक करती रही।

आग लगने के बाद अंग्रेज शासकों ने आग बुझाने के लिये कोई कोशिश नहीं की। आग भड़कती रही, अंग्रेज शासन चुप रहा। अंग्रेजों के अत्याचार और जुल्म जबरदस्ती के अनुभव पुणे की जनता को होने के कारण पुणे निवासी आग बुझाने के लिये आगे नहीं बढे और इस कारण शनिवारवाडे के बाहरी दीवारों के अंदर इस इतिहास वास्तु की ईंटें, पत्थर, कीचड़, मिट्टी, रक्षा और मलबे सहित कितने साल तक पड़ा रहा। ना उसे पुणेकरो ने देखा ना ब्रिटिश सरकार ने। इतिहास विशेषज्ञों का कहना है कि अंग्रेजों ने जान बूझकर इस वाडे के अंदर के महलों में आग लगवाई थी। क्योंकि यह वास्तु मराठा सल्तनत का मानबिंदू था। इसे देखकर मराठों के दिल में अंग्रेजों के खिलाफ शत्रुत्व की भावना भड़क उठ सकती थी। अंग्रेजों का तख्ता पलटने का शोला भड़क न उठे। क्योंकि मराठा वीरों ने ही अपने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आखिरी दम तक अंग्रेजों के साथ युद्ध किया था। शनिवारवाडे पर अंग्रेजों का झंडा लहराने के बाद ही सारे हिंदुस्थान में अंग्रेजों का अमल शुरू हुआ था।

कई साल गुजरने के बाद इतिहास प्रेमी कलेक्टर रॉबर्टसन्स ने शनिवारवाडे के मलबे को हटा के साफ–सफाई की। उसने अपना डेरा वहाँ डाला। उसका नया मकान बनने के बाद उसने शनिवारवाडा छोड़ दिया। उसके बाद पुराने खंडहरों के सहारे यहाँ अस्पताल बनवाया गया। वहाँ ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ जालसाजी, अपराध करने वाले राजकीय और चोर लुटारू जैसे कैदी रखे जाने लगे। एक दिवाणखाने में पंगुगृह बनवाया गया और नियती कहो या अंग्रेजों के मन में बसी हुई बदले की भावना की शह समझो, एक बचे खुचे इमारती की मरम्मत करके वहाँ पागलखाना बनवाया गया। और इन पागलों के लिये अस्पताल भी बनवाया गया। इस पागलखाने का इस्तेमाल अंग्रेज सरकार, अपने कारोबार में रोडे अटकाने वाले, विरोध करने वाले हस्तियों को पागल करार करके इस पागलखाने में डाल देती। जहाँ आम आदमी, पागलों के साथ रहकर पागल बन जाता था। दूसरे एक नई इमारत में जो गणेश दरवाजे के उत्तर दिशा में थी, उसमें कई महीने तक अदालत का कामकाज चलता था। पुणे के शिवाजीनगर विभाग में अदालत की नयी इमारत बनने के बाद यहाँ से अदालत हटवायी गयी। बाद में यहाँ की इमारत में एक पुलिस थाना बनवाया गया।

दूसरे बाजीराव के पीछे पेशवा बनने के बाद जो ग्रहदशा लगी थी, उसी प्रकार की ग्रहदशा शनिवारवाडे के पीछे लग गयी थी। पेशवा के ग्रहदशा ने उसे गद्दी छोड़ने पर मजबूर किया तो शनिवारवाडे की ग्रहदशा ने उसे राख में बदल दिया। कहते हैं कि अंग्रेजों ने इस वाडे को जानबूझकर आग लगा के जलवाया। क्योंकि आग लगाने के पहले अंग्रेजों ने महलों का कीमती लकड़ी का सामान, ढाँचे, शहतीर, महेराब, नक्काशीदार तख्तपोश आदि अन्य लकड़ी की चीजें निकालकर पुणे के गारपीर नामक जगह लाकर रखी थी। इस जगह पर आजकल कलेक्टरी कचेरी और ससून हॉस्पिटल है।

पेशवाओं के सरदार पुरंदरे थे। जो सासवड नामक गाँव में रहते थे। इस सासवड गाँव में ही संत ज्ञानेश्वर के भाई संत सोपानजी की समाधि है। पुरंदरे के मुंशी पुणे में थे। उनका नाम था सखाराम सदाशिव। इस मुंशी ने ४–३–१८२६ में लिखा हुआ खत इतिहास अभ्यास को प्राप्त हुआ। उसमें पुणे के बारे में लिखा है कि....

'शुक्रवार का वाडा गिराने का काम जारी है। उसके अंदर का व्यंकटेश का चौक गिराया गया। मलबा हटाया गया। शनिवारवाडे के अंदर हजारी फव्वारे के इर्दगिर्द के महल चकनाचूर करके महलों का कीमती लकड़ी का सामान उठाकर गारपीर ले जा रहे हैं.. ..'

इस खत से ये साबित होता है कि अंग्रेजों ने शनिवारवाडे के अंदर पेशवाओं के जो महल थे उन्हें गिरवाकर कीमती लकड़ी का सामान चुराकर बाद में मराठा सल्तनत के इस मानबिंदू को आग लगवाई और फिर आठ दिन तक आकाश में उड़ती हुयी आग की लपटें शान से देखते रहे।

उस वक्त मुंबई इलाका था। अंग्रेजों के जमाने में सर जॉर्ज लाईड इतिहास प्रेमी गव्हर्नर थे। उन्होंने शनिवारवाडे के मलबे के नीचे दबी हुयी ऐतिहासिक वास्तु का उत्खनन करने के आदेश जारी किए। शनिवारवाडे में पड़ी हुयी ईंटें, पत्थर, मलबे हटाये गये और आज आप के सामने जो शनिवारवाडे का ढाँचा नजर आता है, वह पुणे की और महाराष्ट्र के आने वाली पीढ़ी को देखने को मिल रहा है। १७ जून १९१६ को आदेश निकालकर शनिवारवाडे को संरक्षित वास्तू घोषित किया गया। और उसके बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा प्राप्त धन के अनुसार खंडहरों की मरम्मत का काम होता रहा।

इस्वी १९२१ के नवम्बर महीने में प्रिन्स ऑफ वेल्स हिंदुस्थान में अपने राज्य के दौरे पर आये थे। उस वक्त उन्होंने पुणे और शनिवारवाडे को देखने की इच्छा व्यक्त की। तब ज्यादा मजदूर लगाकर जोरशोर से सफाई का काम करवाया गया। पेड़, फूलों के पौधे लगवाये गये। बाग–बगीचे का काम

शेष पृष्ठ 11 पर

हमारा भारत महान कैसे हो

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

क्या भारत में भारत के ही मूल धर्म व संस्कृति को नष्ट करने वालों के विरुद्ध कोई राजनैतिक दल सक्रिय होगा या केवल उनकी धार्मिक भावनाओं का दोहन करके उनकी वोटों से सत्ता के सुख में मस्त होकर अपना दायित्व भूल जाएगा? ध्यान करों २०११ का वह हिंदुओं को एकतरफा दोषी घोषित करने वाला साम्प्रदायिक हिंसा निरोधक विधेयक जिसके होने वाले संभावित उत्पीडन के भय से हिंदुओं के देशव्यापी विरोध के कारण वह रोका गया और जबसे भाजपा २०१४ में केंद्र व उसके बाद अनेक प्रदेशो में सरकार बनाने में सफल होती आ रही हैं। वैसे भी अब यह माना जाने लगा हैं कि राष्ट्रवादियों के लिए भाजपा के अतिरिक्त कोई और विकल्प भी नही है। इस पर भी हमारे धार्मिक व सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट करने के लिए हो रहें आघातों पर पूर्ण विराम नही लगा हैं।

विचार करना होगा कि क्या राष्ट्रवादियों की इच्छांओं का सम्मान हुआ? क्या हिंदुओं के ऊपर हो रहें धार्मिक आघातों पर कोई लेप लगा? क्या जिहाद के लिये सक्रिय आतंकवादियों के भय से सीमाओं व सीमांत प्रदेशों में कोई परिवर्तन हुआ? क्या देश और प्रदेश के विभिन्न मुस्लिम क्षेत्रों से हिंदुओं आदि गैर मुस्लिमों का पलायन रुका? क्या मासूम गैर मुस्लिम लड़कियों का जिहाद के लिए हो रहें शोषण पर कोई अंकुश लगा? यह कैसी विडंबना है कि कश्मीर के विस्थापित हिंदुओं के प्रति कोई सार्थक योजना न होने से उन पीड़ितों के मौलिक व संवैधानिक अधिकारों को भी राष्ट्रवादी सरकार भूल रही हैं, क्यों? दशकों से हमारे संसाधनों का दोहन करने वाले एवं अनेक आपराधिक व आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों के विरुद्ध कठोर रहने वाली भाजपा अब सत्ता में आने के उपरांत भी मौन रहने को क्यों विवश हैं? क्या रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों ने भारतीय समाज की चिंता को और नही बढ़ा दिया हैं?

भारतीय संस्कृति का प्रमुख केंद्र माने जाने वाला बंगाल जो वंदेमातरम के रचयिता बंकिम चंद्र चटर्जी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस व श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसी महान हुतात्माओं की जन्मभूमि रही हैं वहां की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। १९४६ में मुस्लिम लीगियों द्वारा चलाया गया डायरेक्ट एक्शन जिसमें हजारों निर्दोष व मासूम हिंदुओं की नृशस हत्याऐं हुई थी

के इतिहास को भूलना दुर्भाग्यपूर्ण होगा क्योंकि ऐसे ही दर्दनाक दंगे भी देश के विभाजन का कारण बनें थे। परंतु वर्तमान में भी हिन्दुओं के विरुद्ध पश्चिम बंगाल में साम्प्रदायिक दंगे पिछले कई वर्षो से हो रहें हैं। साथ ही अब वहां स्थिति इतनी अधिक बिगड़ गई हैं कि ही हिंदुओं को परंपरागत धार्मिक त्यौहार मनाने तक पर रोक लगा कर मुसलमानों को लुभाया जा रहा है। अनेक मुस्लिम बहुल क्षेत्रों मालदा, मुर्शिदाबाद और उत्तरी दिनाजपुर आदि में नकली नोट, नशीले पदार्थ व अवैध हथियार आदि का देशद्रोही कार्य पनप रहा है। हिन्दुओं को वहां से भगाने के लिए वहां के मुसलमान हिंदू व्यापारियों आदि का बहिष्कार करते हैं। जिससे पीड़ित हिन्दू वहां से बड़ी संख्या में पलायन कर रहें है। कश्मीर की ही तरह यहाँ भी हिन्दुओं को अपने घरों और व्यवसायिक स्थलों को छोड़कर दूसरे स्थानों पर जाना पड़ रहा है। पश्चिम बंगाल की ऐसी विषम परिस्थिति पर प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रकार जेनेट लेवी ने 'अमेरिकन थिंकर' मैगजीन में अपने लेख में हिंदुओं पर हो रहें मुस्लिमों के अत्याचारों के अतिरिक्त बंगाल को मुगलिस्तान बनाने तक के षडयंत्र चलाये जाने पर भी चिंता जतायी हैं। इसके साथ ही केरल, कर्नाटक व पंजाब आदि में राष्ट्रवादी हिंदुओं की हो रही हत्याऐं क्या केंद्र की मोदी सरकार को विचलित नही करती? क्या केंद्रीय प्रशासन राज्य स्तरीय बढ़ते अपराधों पर अंकुश लगाने में असमर्थ हैं तो फिर मोदी जी का एक कुशल व कठोर प्रशासक बताने वालों को पुनः विचार करना होगा? नोटबंदी व जी.एस.टी. जैसे कठोर व अलोकप्रिय निर्णय लेने में दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देने वाले हमारे लोकप्रिय प्रधानमंत्री जी क्यों नही ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले देशवासियों को सुरक्षित व निश्चिंत होकर जीवनयापन करने का वातावरण बनवा कर अपना संवैधानिक दायित्व निभाते?

समाचारों के अनुसार इस वर्ष सबसे अधिक २०० से ऊपर आतंकियों को जहन्नुम पहुँचाने में सुरक्षाबलों की सफलता अच्छा संदेश देती हैं परंतु इतने पर भी जम्मू-कश्मीर जिहादियों का सबसे बड़ा लक्ष्य बना हुआ है। प्राप्त आंकड़ो से ज्ञात होता है कि पिछले सात वर्षो में इस वर्ष सबसे अधिक ११७ कश्मीरी मुस्लिम युवक विभिन्न आतंकी संगठनों से जुड़ें हैं। यहीं नही अनेक आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट आफ जम्मू एन्ड कश्मीर (आई.एस.जे.के.) के नए नाम से आतंकियों को एकत्रित करके जिहाद को आगे बढाने व उसकी जिम्मेदारी निभाने को तैयार हो रहें हैं।

इसी प्रकार अनेक समस्याओं में एक है देश में बढ़ती मुस्लिम जनसँख्या और उससे बिगड़ता हिन्दू-मुस्लिम जनसंख्या अनुपात। क्या १९४७ में देश के विभाजन की त्रसदी को भुला देना चाहिये? यह कौन सोचेगा कि जब धार्मिक आधार पर देश एक बार टूट चुका है तो उसकी पुनरावर्ती से कैसे बचें? क्या बढ़ती मुस्लिम संख्या और उनकी जिहादी मानसिकता पुनः उनको देश के और विभाजन को कुप्रोत्साहित नही करेगी? क्या जहां जहां मुस्लिम जनसंख्या २० से २५ प्रतिशत हो जाती हैं वहां वहां धार्मिक कट्टरता, साम्प्रदायिक दंगे, अपराध व आतंकवाद आदि बढ़ें तो सरकार व समाज मौन रहें? यह कहां तक उचित है कि लोकतांत्रिक राजनीति में सत्ता पाने के लिए मुस्लिम तुष्टिकरण को बढ़ावा दिए जाने की दशको पुरानी कुटिल व असंवैधानिक परम्परा पर अभी तक अंकुश ही नही लगाया गया?

ध्यान रहें कि मुस्लिम तुष्टिकरण को नये शब्दों में ढाल कर मुस्लिम सशक्तिकरण का नामकरण करके अल्पसंख्यक मंत्रालय के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी दृढ़ता पूर्वक अनेक योजनायें स्थापित कर रहें है। केंद्र की पूर्व सरकारों द्वारा मुस्लिम तुष्टिकरण की नीतियों को अफीम बताने वाले नकवी जी बहुसंख्यक समाज को इतना अज्ञानी क्यों समझ रहें है? क्या बहुसंख्यकों के साथ भेदभाव बढ़ा कर केवल मुसलमानों को सशक्त करके वे किस प्रकार मुस्लिम सशक्तिकरण की योजनाओं को उनके तुष्टीकरण से पृथक कर सकते है? हमको यह नही भूलना चाहिए कि मुस्लिम तुष्टिकरण की बढ़ती हुई योजनाओं से भी आहत व तिरस्कृत होने वाले बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने ही गुजरात के तत्कालीन राष्ट्रवादी नायक श्रीमान नरेंद मोदी को २०१४ के आम चुनावों में सत्ता के शीर्ष पद पर बैठाया था।

निसंदेह आज मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा को व्यापक समर्थन मिल रहा हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नही कि यह समर्थन व्यक्तिगत मोदी जी का हो रहा है। बल्कि यह उनकी उस राष्ट्रवादी विचार धारा का हैं जिसका उन्होनें वर्षो से पालन किया है और पिछले लोकसभा चुनावों में जिसका भरपूर बढ़-चढ़ कर प्रचार भी हुआ। तात्पर्य यह है कि समाज अच्छे विचारों और कार्यो का समर्थक होता हैं, न कि व्यक्ति विशेष का। निसंदेह सज्जनों के विचार भी कभी त्रुटिपूर्ण व समाज को भ्रमित करने वाले हो सकते हैं जबकि अनेक दुर्जन भी समयानुसार अच्छे विचार रख कर समाज को प्रभावित करने में समर्थ हो जाते हैं।

अतः भविष्य में होने वाले प्रदेशीय व केंद्रीय चुनावों में मोदी जी का राष्ट्रवादी चेहरा कितना सफल होगा ये उनके शेष रहे लगभग डेढ वर्ष के कार्यकाल में होने वाले कार्यो पर निर्भर करेगा? साथ ही भाजपा के लिए यह भी लाभकारी होगा कि उसका शीर्ष नेतृत्व अपने चारों ओर चिपके रहने वाले चाटुकारों और स्वार्थी छोटे-बड़े नेताओं से सावधान रहकर धरातल पर निस्वार्थ कार्य करने वाले लाखों-करोड़ों कार्यकर्ताओं व अपने शुभचिंतकों से संवाद बढ़ाये। क्योंकि कही ऐसा न हो कि इंडिया शाइनिंग नारे के कारण जो पराजय राष्ट्रवादी समाज व भाजपा को २००४ में झेलनी पड़ी थी उसकी पुनरावर्ती का कारण मुसलमानों का तुष्टीकरण नही सशक्तिकरण बनें? विचार करना होगा कि जब भा.ज.पा. नेशन फर्स्ट और सबका साथ व सबका विकास के नाम पर सत्ता पाने में सफल हुई हैं तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह अल्पसंख्यक के नाम पर मुसलमानों को अलग से लाभान्वित करने की सामाजिक विद्वेषकारी नीतियों को बनायें रखें? राष्ट्र के प्रति सकारात्मक सिद्धांतों और विचारों का सम्मान करने वाली भाजपा को वर्तमान सत्तालोलुप राजनीति को राष्ट्रनीति में परिवर्तित करने का मिला यह सुअवसर हमारा भारत महान की दिशा का मार्ग प्रशस्त करें, ऐसा सभी सोचें तो अनुचित नही होगा?

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री किरेन रिजिजु जी,
माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार
नॉर्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : तोड़ती नहीं जोड़ती है हिंदी।

महोदय,

उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री हदय नारायण दीक्षित ने दैनिक जागरण में लिखे अपने लेख में निम्नलिखित महत्वपूर्ण तथ्यों की ओर और ध्यान आकर्षित किया है।

१. संविधान में हिंदी संघ की राजभाषा है, इसलिए क्षेत्रीय राजनीति की माँगें (हिंदी के विरोध में) निंदनीय है।
२. भारत में सौ करोड़ से ज्यादा हिंदी भाषी हैं। भारत के बाहर भी अनेक देशों में करोड़ों हिंदी भाषी हैं।
३. तमिल या कन्नड़ से हिंदी का कोई बैर नहीं।
४. राजभाषा विरोधी दल या संगठन संविधान का पालन क्यों नहीं करते?
५. राजभाषा के प्रश्न को क्षेत्रीय अस्मिता से जोड़ना असंवैधानिक है और राष्ट्रीय एकता का विध्वंसक भी।

उपयुर्क्त संबंध में निवेदन है कि कर्णाटक में मेट्रो रेल में हिंदी में लिखे नाम पट्ट/सूचना पट्ट काली स्याही से पोतने न दिए जाएँ और कर्णाटक सरकार से आवश्यकता हो तो बातचीत की जाए, क्योंकि हिंदी संघ की राजभाषा है जिसका तात्पर्य है केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारें देश की जनता और संविधान के अनुच्छेद ३५१ के अनुसार संघ का कर्तव्य है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और विकास करे।

इस सम्बंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

नरेश अग्रवाल की संसद सदस्यता समाप्त हो:हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने समाजवादी पार्टी के सांसद नरेश अग्रवाल द्वारा कुलभूषण जाधव की तुलना एक आंतकवादी से करने की तीव्र निन्दा की है। उन्होंने कहा है कि नरेश अग्रवाल का वक्तव्य राष्ट्र विरोधी है इसलिये ऐसे राष्ट्र विरोधी वक्वव्यों को देश कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगा। हिन्दू महासभा नेताओं ने राज्यसभा के चेयरमैन वैंकेया नायडू से मांग की है कि सपा सांसद नरेश अग्रवाल की राज्यसभा से सदस्यता तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दी जाये, ताकि कोई सांसद या विधायक आगे कभी राष्ट्रद्रोह की बात न कर सकें। हिन्दू महासभा नेताओं ने पाकिस्तानी जेल में बंद भारतीय कुलभूषण जाधव की मां तथा धर्मपत्नी के साथ पाकिस्तान सरकार के व्यवहार की तीव्र निन्दा की है तथा कहा कि केन्द्र सरकार को इस पर तीव्र विरोध करनी चाहिए। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि शादीशुदा हिन्दू महिलाओं के प्रतीक बिन्दी, चूड़ी तथा मंगलसूत्र का निकलवाना एक धर्म विशेष का अपमान है। इसे हिन्दुस्तान की जनता चुपचाप बर्दाश्त नहीं करेगी। हमें पाकिस्तान को इस घृणित कार्य की सजा अवश्य देनी चाहिए। यदि पाकिस्तान की सरकार माफी नहीं मानती है तो, भारत सरकार को पाकिस्तान के साथ सभी प्रकार के राजनयिक संबंध समाप्त कर देनी चाहिए।

शेष पृष्ठ 7 का **स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के अंतिम.....**

ही है। इसलिए व्यर्थ शोक करने से क्या फायदा? बाबा चले गए और भी दूसरे कई चले गए, यदि सब के लिए हम रोने बैठें, तो यह उमर भी पूरी नहीं पड़ेगी। **अब तू ऐसा कर कि दिल्ली जा। वहां तेरा बाग सूख जाएगा।** यहां अकेला प्रफुल्ल रहेगा, से धैर्य दे और रो मत।'' सुनकर प्रभाताई बोली कि टिकिट नहीं मिलते। इस पर तात्याराव ने स्वयं छानबीन करके ''डी-लक्स-एक्सप्रेस'' से करवाने के लिए लोगों से कह दिया। इस बसके पीछे स्वातन्त्र्य वीर की इच्छा यह थी कि अंतिम दृश्य देखकर लड़की को कहीं दुःख न हो।

सरकार की गुप्त पुलिस

सरकार की दक्षता भी ऐसी है कि जहां रखनी चाहिए वहां रखती नहीं और जहां नहीं चाहिए वहां रखती है। उनकी मृत्यु के एक राशि पूर्व जब पी.टी.आई. (प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया) ने **''सावरकर अति अस्वस्थ''** इस शीर्षक के अंतर्गत समाचार प्रकाशित किया तो सावरकर-सदन की ओर जनसागर उमड़ पड़ा। इस समय भी गुप्त पुलिस का समूह देखकर लोग पूछते थे, **''ये गुप्तचर अब यहां क्यों हैं? क्या ऐसी हालत में भी स्वातन्त्र्यवीर पर सरकार का सन्देह कायम है? क्या सरकार की यही मानवता है?''** यह बात मराठा दैनिक के सम्पादक आचार्य प्रो. के. अत्रे की नजरों में आई, उन्होंने उस बात को लेकर अपने दैनिक में सरकार की जो खबर ली तो रातों-रात गुप्त पुलिस का वह समूह चुपके से खिसक गया।....

शंकराचार्य को प्रणाम

अत स्वातन्त्र्यवीर का गला भी सूज आया। **इतनी यमयातना होने पर भी स्वातन्त्र्यवीर की बुद्धि स्थिर और कार्यरत थी।** श्रीमद्शंकराचार्य द्वारिकापीठ ने संदेश भेजा कि वे स्वातन्त्र्यवीर क दर्शन के लिए वहां आना चाहते हैं। उत्तर में तात्याराव ने लिखा कि-**''वस्तुतः तो मुझे ही आपके दर्शनार्थ आना चाहिए था, पर अब वह सम्भव नहीं है।''** तब शंकराचार्य ने लिखा कि **''नियम के अपवाद भी होते हैं।'' इस पर फिर तात्याराव ने लिखा कि ''आप आइये, पर आपका स्वागत हम लोगों से कैसे होगा।''** तब तात्याराव ने हमसे कहा कि उनके लिए फूलमालाएं तैयार रखो और उनका योग्य स्वागत करो तथा उनसे मेरा प्रणाम कह दो।''

जनता का अथाह प्रेम

स्वातन्त्र्यवीर की अवस्थथा का समाचार सुनकर मन्दिरों में गुरुद्वारों में प्रार्थनाएं होने लगीं। ब्राह्मणों ने सर्वत्र वेदपाठ करना शुरू कर दिया। छोटे बच्चों ने घर के सामने आकर प्रार्थना की और **''वीर सावरकर अमर रहें''** की घोषणा से दिशाएं गुंजा दीं उन सबकी एक ही इच्छा थी कि स्वातन्त्र्यवीर स्वस्थ हो जायें। यहां न जातिभेद था, न दलभेद था न प्रान्तभेद।

मृत्यु हार गई! स्वातन्त्र्यवीर अमर हो गए

शनिवार दिनांक २६ फरवरी को सबेरे ८.०८ बजे तात्याराव जागे। मुंह ६ गोया, पर चम्मच भर पानी भी नहीं पी सके। रात को बुखार आया था जो अभी तक उतना नहीं। था, जब सभी चिन्तित हो गए। स्वातन्त्र्यवीर के जीवन में भव्यता रही अतः उनके मरण में भी भव्यता स्वाभाविक ही थी। पर यम मानों उनके पास आने से डरता था। वे मृत्यु को निमन्त्रण देते थे; पर मृत्यु उनके पास जाने से डरती थी। अंत में मृत्यु हार गई और स्वातन्त्र्यवीर अमर हो गए। डॉक्टरो की भागदौड़ शुरू हो गई। १० बजे उन्हें प्राण-वायु दिया गया। कई इन्जेक्शन भी दिये गए, पर स्वातन्त्र्यवीर शांति से पड़े रहे। उनकी उंगलियां हिलती रहीं। **चमत्कार यह भी उनके शरीर का कुछ भाग गरम और कुछ भाग ठण्डा था।** सभी के आँसू बह रहे थे, कुछ भरी आँखों से एक दूसरे को देख रहे थे। सौ. प्रभाताई पायताने बैठ कर रो रही थीं। माधवराव भी बराबर रो रहे थे। तात्याराव के पुत्र विश्वासराव की मन-स्थिति का वर्णन असम्भव ही है।

माँ के चरणों में लीन हुए

अन्त में ..!! **११ बजे के बाद पंछी उड़ गया,** डॉक्टरों ने पत्रक तैयार किया। टेलीफोन टनटनाने लगे, आकाशवाणी पी.टी.आई. आदि समाचार संस्थाओं ने स्वातन्त्र्यवीर की मृत्यु का समाचार जगत भर में फैला दिया। **देश की स्वातन्त्र्य एवं राष्ट्रोनति की सतत् चिन्ता करने वाला एक महान् राष्ट्रभक्त भारत मां के चरणों में लीन हो गया।** अपने सुपुत्र को मरता देख कर किस माता को दुःख नहीं होगा......?

शेष पृष्ठ 1 का **भारत-पाक सीमा के पास.......**

में बनी तीन एके-४७, १५० गोलियां, दो मैगजीन के साथ चीन में बनीं .३० बोर की दो पिस्टल, १०० गोलियां और छह हथगोले गुरदासपुर सेक्टर की कस्सोवाल सीमा चौकी से बरामद किए। उन्होंने कहा कि हथियारों का यह जखीरा पाकिस्तान से तस्करी कर लाया गया था और इसे जीरो लाइन के पास रखा गया था। बीएसएफ जवानों ने भारत-पाक सीमा पर संदिग्ध गतिविधि देखी थी जिसके बाद उन्होंने तलाशी अभियान शुरू किया। उन्होंने कहा तलाशी अभियान के दौरान जमीन में दबाकर रखा गया एक सफेद बैग बरामद किया गया जिसमें हथियार और गोला बारूद था। बीएसएफ के डीआईजी ने कहा कि पुलिस यह जांच करेगी कि यह हथियार किस तक पहुंचाए जाने थे। उन्होंने कहा कि ये हथियार स्थानीय पुलिस को सौंपे जाएंगे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से कहा है कि सीमा पार से घुसपैठ व तस्करी को किसी भी कीमत पर रोकना होगा। आश्चर्य की बात है कि अभी भी घुसपैठ व तस्करी पूरी तरह से रूकी नही है। हमें इसे रोकने के लिये भारतीय सेना को पूरी छूट देनी होगी।

शेष पृष्ठ 8 का

पुणे का शनिवारवाड़ा....

पूरा करवाया गया। दिल्ली दरवाजे के ऊपर के नगारखाने की जगह पर लैंड रिकॉर्ड का ऑफिस था। वह ऑफिस वहाँ से हटवाया गया। ऑफिस बनाते वक्त वहाँ कुछ तोड़–फोड़ करनी पड़ी थी। आसपास के जांगले गिरे हुए थे। आज लकड़ी के बॉर्डरनुमा जो जंगले दिखाई देते हैं वे कोंनकर नामक हस्ती के महलों से निकालकर बिठाये गये हैं। इसी साफ–सफाई के वक्त दिल्ली दरवाजों के अंदर जहाँ तोप रखी है उसकी नजदीकी दीवारें, गणेशजी, ब्रह्मा, शेष्पशायी विष्णु, कृष्णलीला दशावतार इ. चित्रकारी से सजायी गयी थी। आज भी वह अस्पष्ट से देखने को मिलती है। १६२० से लेकर १६४२ साल तक शनिवारवाडे की मरम्मत, साफ–सफाई रखरखाव के काम धन की उपलब्धि के हिसाब से चलते रहे थे। परिणामस्वरूप आज जो वाडे का रूप आम आदमी को देखने मिलता है। अब शनिवारवाडे का रूप बदलने के लिए उसके रखरखाव के लिये मंत्रीगण, भारत सरकार का पुराणवस्तू संशोधन विभाग, पुणे महानगरपालिका, महाराष्ट्र सरकार का पुरातत्व विभाग मिलकर काम कर रहे हैं। (शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 2 का

अभूतपूर्व श्रीजगन्नाथ रथयात्रा.....

विष्णु मूर्ति का निर्माण कराने का निश्चय करते ही वृद्ध बढ़ई के रूप में विश्वकर्मा जी स्वयं प्रस्तुत हो गए। उन्होंने मूर्ति बनाने के लिए एक शर्त रखी कि मैं जिस घर में मूर्ति बनाऊँगा उसमें मूर्ति के पूर्णरूपेण बन जाने तक कोई न आए। राजा ने इसे मान लिया। आज जिस जगह पर श्रीजगन्नाथ जी का मन्दिर है उसी के पास एक घर के अंदर वे मूर्ति निर्माण में लग गए। राजा के परिवारजनों को यह ज्ञात न था कि वह वृद्ध बढ़ई कौन है। कई दिन तक घर का द्वार बंद रहने पर महारानी ने सोचा कि बिना खाए–पिये वह बढ़ई कैसे काम कर सकेगा। अब तक वह जीवित भी होगा या मर गया होगा। महारानी ने महाराजा को अपनी सहज शंका से अवगत करवाया। महाराजा के द्वार खुलवाने पर वह वृद्ध बढ़ई कहीं नहीं मिला लेकिन उसके द्वारा अर्द्धनिर्मित श्रीजगन्नाथ, सुभद्रा तथा बलराम की काष्ठ मूर्तियाँ वहाँ पर मिलीं।

महाराजा और महारानी दुःखी हो उठे। लेकिन उसी क्षण दोनों ने आकाशवाणी सुनी, 'व्यर्थ दुःखी मत हो, हम इसी रूप में रहना चाहते हैं, मूर्तियों को द्रव्य आदि से पवित्र कर स्थापित करवा दो।' आज भी वे अपूर्ण और अस्पष्ट मूर्तियाँ पुरुषोत्तम पुरी की रथयात्रा और मन्दिर में सुशोभित व प्रतिष्ठित हैं। रथयात्रा माता सुभद्रा के द्वारिका भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण व बलराम ने अलग रथों में बैठकर करवाई थी। माता सुभद्रा की नगर भ्रमण की स्मृति में यह रथयात्रा पुरी में हर वर्ष होती है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...............................1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 6 का

चन्द्रशेखर आजाद बलिदान दिवस.....

लिये इतिहास में दर्ज हो गयी। हैं। उपर्युक्त कटु सत्य पुलिस ने बिना किसी को इसकी सूचना दिये चन्द्रशेखर आजाद का अन्तिम संस्कार कर दिया था। जैसे ही आजाद की बलिदान की खबर जनता को लगी सारा इलाहाबाद अलफ्रेड पार्क में उमड पडा। जिस वृक्ष के नीचे आजाद शहीद हुए थे लोग उस वृक्ष की पूजा करने लगे। वृक्ष के तने के इर्द–गिर्द झण्डियाँ बाँध दी गयीं। लोग उस स्थान की माटी को कपडों में शीशियों में भरकर ले जाने लगे। समूचे शहर में आजाद की बलिदान की खबर से जबरदस्त तनाव हो गया। शाम होते–होते सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमले होने लगे। लोग सडकों पर आ गये। आजाद के बलिदान की खबर जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू को मिली तो उन्होंने तमाम काँग्रेसी नेताओं व अन्य देशभक्तों को इसकी सूचना दी।। बाद में शाम के वक्त लोगों का हुजूम पुरुषोत्तम दास टंडन के नेतृत्व में इलाहाबाद के रसूलाबाद शमशान घाट पर कमला नेहरू को साथ लेकर पहुँचा। अगले दिन आजाद की अस्थियाँ चुनकर युवकों का एक जुलूस निकाला गया। इस जुलूस में इतनी ज्यादा भीड थी कि इलाहाबाद की मुख्य सडकों पर जाम लग गया। ऐसा लग रहा था जैसे इलाहाबाद की जनता के रूप में सारा हिन्दुस्तान अपने इस सपूत को अंतिम विदाई देने उमड पडा हो। जुलूस के बाद सभा हुई। सभा को शचीन्द्रनाथ सान्याल की पत्नी प्रतिभा सान्याल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि जैसे बंगाल में खुदीराम बोस की बलिदान के बाद उनकी राख को लोगों ने घर में रखकर सम्मानित किया वैसे ही आजाद को भी सम्मान मिलेगा। सभा को कमला नेहरू तथा पुरुषोत्तम दास टंडन ने भी सम्बोधित किया। इससे कुछ ही दिन पूर्व ६ फरवरी १६२७ को पण्डित मोतीलाल नेहरू के देहान्त के बाद आजाद भेष बदलकर उनकी शवयात्रा में शामिल हुए थे।

व्यक्तिगत जीवन : आजाद प्रखर देशभक्त थे। काकोरी काण्ड में फरार होने के बाद से ही उन्होंने छिपने के लिए साधु का वेश बनाना बखूबी सीख लिया था और इसका उपयोग उन्होंने कई बार किया। एक बार वे दल के लिये धन जुटाने हेतु गाजीपुर के एक मरणासन्न साधु के पास चेला बनकर भी रहे ताकि उसके मरने के बाद मठ की सम्पत्ति उनके हाथ लग जाये। परन्तु वहाँ जाकर जब उन्हें पता चला कि साधु उनके पहुँचने के पश्चात् मरणासन्न नहीं रहा अपितु और अधिक हट्टा–कट्टा होने लगा तो वे वापस आ गये। प्रायः सभी क्रान्तिकारी उन दिनों रूस की क्रान्तिकारी कहानियों से अत्यधिक प्रभावित थे आजाद भी थे लेकिन वे खुद पढ़ने के बजाय दूसरों से सुनने में ज्यादा आनन्दित होते थे। एक बार दल के गठन के लिये बम्बई गये तो वहाँ उन्होंने कई फिल्में भी देखीं। उस समय मूक फिल्मों का ही प्रचलन था अतः वे फिल्मो के प्रति विशेष आकर्षित नहीं हुए। चन्द्रशेखर आजाद ने वीरता की नई परिभाषा लिखी थी। उनके बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन और तेज हो गया, उनसे प्रेरणा लेकर हजारों युवक स्ववतन्त्रा आन्दोलन में कूद पड़े। आजाद की शहादत के सोलह वर्षों बाद १५ अगस्त सन् १६४७ को हिन्दुस्तान की आजादी का उनका सपना पूरा तो हुआ किन्तु वे उसे जीते जी देख न सके। सभी उन्हें पण्डितजी ही कहकर सम्बोधित किया करते थे।

शेष पृष्ठ 4 का

ह्रदय रोग रक्षक औषधियाँ.....

खून की कमी आदि विकारों में भी लाभप्रद है। धड़कन की अधिकता, घबराहट, ह्रदय की अनियमित गति, भ्रम, दाह आदि विकारों में भी लाभ मिलता है।

अर्जुनक्षीरपाक

गाय का दूध १६० ग्राम
पानी १६० ग्राम
अर्जुनछाल का जौकुट चूर्ण १० ग्राम

मंद अग्नि पर पकाएँ। जब पानी जल जाये और दूध मात्र शेष बचे तो उतारकर छान लें। इसमें १ चम्मच मिसरी चूर्ण और १ छोटी इलायची का चूर्ण मिलाकर हल्का गरम पीएँ। यह ह्रदय को शक्ति देता है तथा ह्रदय विकारों को दूर करता है। इसके सेवन से धड़कन वृद्धि दूर होती है तथा ह्रदय की गति नियमित होती है। अन्य औषधियों के अनुपान के रूप में या अकेले भी इसका सेवन किया जाता है। ह्रदय रोगियों को रोज कम–से–कम १०–१२ गिलास पानी पीना चाहिए क्योंकि पानी हार्ट अटैक से बचाता है। पानी रक्त को पतला रखने का कार्य करता है जिससे रक्त के थक्के नहीं जम पाते। पानी भरपूर पीने से मल–मूत्र की कब्जियत भी दूर होती है तथा विषाक्त पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाते हैं। ह्रदय रोगियों के लिए भरपूर नींद सोना भी जरूरी है। रोजाना रात में ७–८ घंटे सोना चाहिए। सोने से ह्रदय स्वस्थ रहता है, तनाव कम होता है तथा रक्तचाप भी नियंत्रित रहता है पर दिन में सोना ठीक नहीं है।

शेष पृष्ठ 1 का

परमाणु क्षमता वाली अग्नि-१ए......

संगठन द्वारा निर्मित अग्नि–५ अग्नि मिसाइल श्रृंखला का सबसे उन्नत संस्करण है जो १६६० में शुरू हुए इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम का हिस्सा है। इससे पहले २०१२, २०१३, २०१५ और २०१६ में इस मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया था। भारत अग्नि–५ के साथ अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन के साथ आईसीबीएम क्षमताओं वाले देशों में शामिल हो गया है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय रक्षा वैज्ञानिकों को शुभकामनएं दी हैं तथा केन्द्र सरकार से कहा है कि रक्षा के क्षेत्र में शोध के लिये भारतीय रक्षा वैज्ञानिकों को सभी सुविधायें मिलनी चाहिए।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)—11/6129/2016-17-18
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

हिन्दूनिष्ठ समाज सुधारक : सावरकर

हिन्दू और हिन्दुत्व पर १६२४ में लिखी सावरकर की पुस्तक 'हिन्दुत्व' आज भी हर दृष्टि से सटीक और व्यावहारिक है। उनके द्वारा दी गई हिन्दू की यह परिभाषा राष्ट्रीय है धार्मिक नहीं।

आसिन्धुः सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
पितृभूः पुण्य भूमिश्चैव स वै हिन्दु स्मृतः।।

जो सिन्धु सरिता से सिन्धु सागर तक फैले हुए प्रदेश को अपनी पितृभूमि, पुण्यभूमि मानता हो वह हिन्दू है।

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व—सावरकर ने हिन्दुत्व को ही राष्ट्रीयत्व माना। वे जैन, बौद्ध, सिक्ख, आर्य सभी को हिन्दू मानते थे और वे उस स्वराज्य को आत्महत्या के समान मानते थे जो हिन्दुत्व का समर्थक न हो।

धर्मान्तरण यानि राष्ट्रान्तरण—सावरकर का उद्‌घोष था—'धर्मान्तरण यानी राष्ट्रान्तरण'। उनका मत था हिन्दू का धर्म परिवर्तन होने से उसकी हिन्दुस्तान के प्रति आस्थायें भी बदल जाती हैं। वे स्वामी श्रद्धानन्द और भाई परमानन्द के शुद्धि अभियान को आवश्यक मानते थे। अंडमान की जेल में खूंखार अपराधी मुस्लिम पठान वार्डन बना दिये जाते थे और वो हिन्दू कैदियों को लालच और अत्याचार द्वारा मुस्लिम बनने पर मजबूर करते थे। सावरकर ने कठोर यातनाएँ सहते हुए भी जेल में शुद्धि आन्दोलन चलाया। धर्मान्तरित हिन्दुओं को जब अन्य हिन्दू अपने साथ भोजन नहीं कराते थे तो सावरकर उनकी अलग से पंक्ति बिठाकर उनके साथ बैठकर भोजन करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द कहते थे सावरकर में किसी वैदिक ऋषि की आत्मा है।

सुरक्षा के बिना विकास असंभव—जब गाँधीवादियों का अहिंसा पर जोर चल रहा था तो सावरकर ने देश के शस्त्रीकरण पर जोर दिया। सावरकर ने चेतावनी देते हुए कहा, 'हमें विकास करना है, सड़कें बनानी हैं, परन्तु किसके लिए बनानी हैं, इन्हीं सड़कों पर जब शत्रु के टैंक भी दौड़ते हुए आ सकते हैं। इसलिए सुरक्षा के बिना विकास संभव नहीं है।

हिन्दुओं का सैनिकीकरण १६४० में हिन्दू महासभा के अधिवेशन में सावरकर ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि हिन्दू युवकों को प्रोत्साहित कर सेना की हर शाखा में भर्ती करवाने का पूर्ण प्रयास करें। जब कांग्रेस और कम्युनिस्ट नेताओं ने इस सैनिकीकरण की नीति का विरोध करते हुए अंग्रेजों के साथ मिलने का आरोप लगाया तो सावरकर ने अपने कार्यकर्ताओं को समझाया कि हमारे युवकों को सेना में भर्ती होकर सैनिक शिक्षा पाकर शस्त्रों से सुसज्जित होना चाहिए फिर यह हमारे हाथ में है कि हम अपनी बंदूक की नली किस ओर घुमा दें।

सामाजिक संरचना के प्रयास—१६२२ में सावरकर को रत्नागिरी जेल में रखा गया। १६२४ में दो शर्तों के साथ १. राजनीति से दूर रहेंगे, २. बिना अनुमति के रत्नागिरी से बाहर नहीं जा सकेंगे, रत्नागिरी में कमरा लेकर परिवार के साथ रहने की अनुमति दे दी गई। इस काल में सावरकर ने ध्यान दिया कि धर्म के नाम पर शोषण और पाखंड से समाज में घोर विषमतायें और वैमनस्य बढ़ रहा है जिसके कारण ऐसी दुर्दशा थी कि होली, दीपावली, दशहरा पर्व भी अलग-अलग वर्गों में और भिन्न-भिन्न विधियों से मनाये जाते थे। इस दिशा में उनका पहला कदम था **'सहभोज'** का आयोजन। प्रत्येक रविवार को सभी जाति वर्ग के लोग एक साथ बैठकर भोजन करते थे। सावरकर कहते थे, **''हमारी पत्तल भले ही एक न हो पर पंगत को एक हो सकती है।''**

फिर दूसरा कदम था **'सामूहिक पर्व'**। विजयदशमी पर्व सभी जाति वर्ग के लोग एक ही स्थान पर मनायें, इसके लिए सावरकर ने समझाते हुए कहा कि जिन श्रीराम का विजय पर्व हम मना रहे हैं उनके जीवन में केवट का भी महत्त्व था। उन्हीं श्रीराम ने भीलनी शबरी के झूठे बेर खाए थे। यह सब लोग भी केवट के भाई हैं और शबरी की बहनें हैं। आगे बढ़कर इन्हें स्वीकार कीजिये। और सचमुच! विजयदशमी का पर्व महामिलन के रूप में मना।

सुरेन्द्र सिंह 'सूर्या'

कबिरा खड़ा बजार में

लगा दिया आखिरी दम

केन्द्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने सरकार का अंतिम और पूर्णकालिक बजट पेश किया। प्रधानमंत्री मोदी ने पहले संकेत दिया था कि बजट लोकलुभावन नहीं होगा। लेकिन आसन्न चुनावों को देखते हुए यकीन नहीं था कि सरकार सख्त बजट पेश कर सकती थी। और जैसी कि उम्मीद थी सरकार ने पूरी तरह चुनावी बजट पेश किया है। जिसमें किसानों, गरीबों और कमजोर तबकों के लिए कई बड़ी घोषणाएं की गई हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि रोजगार सृजन सरकार के नीति निर्माण का केंद्र बिंदु है। किसानों की मेहनत की तारीफ करते हुए जेटलीजी ने बताया कि २७५ मिलियन टन खाद्यान्न का रिकार्ड उत्पादन हुआ। और उपज पर लागत से डेढ़ गुना दाम मिले, इस पर सरकार का फोकस है। उन्होंने कहा कि खरीफ फसलों की डेढ़ गुना कीमत दी जाएगी। वित्त मंत्री ने पेट्रोल-डीजल पर लगने वाली एक्साइज डयूटी घटाने का ऐलान किया। लेकिन मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए सीमा शुल्क बढ़ा दिया है, जिससे मोबाइल-टीवी महंगे हो जाएंगे। इस बजट की सबसे बड़ी बात रही राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा योजना का ऐलान, जिसके तहत १० करोड़ परिवार को प्रत्येक वर्ष ५ लाख रुपये तक की राशि अस्पताल में इलाज के लिए सरकार उपलब्ध कराएगी। सरकार २४ नए मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों की स्थापना करेगी और जिला स्तरीय अस्पतालों को भी अपग्रेड किया जाएगा। एक ओर सरकार ने सबसे बड़ी स्वास्थ्य सुरक्षा योजना का ऐलान किया है, दूसरी ओर स्वास्थ्य और शिक्षा में सेस (ऐसा उपकर जो टैक्स पर लगता हो) १ फीसदी बढ़ाकर ३ से ४ प्रतिशत कर दिया है। इस बढ़ोतरी का असर स्वास्थ्य, शिक्षा से लेकर सभी क्षेत्रों पर पड़ने वाला है। इससे पहले मोदी सरकार स्वच्छ भारत के लिए भी सेस टैक्स लगा चुकी है। जिसके कारण जनता की जेब से पैसा तो गया, लेकिन भारत अभी भी स्वच्छ नहीं हो पाया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सरकार ने आदिवासी बहुल ब्लाकों में एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय खोलने का प्रस्ताव दिया है। अभी आदिवासी इलाकों में सरकारी स्कूलों, छात्रवासों, प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों की जो दुर्दशा है, उसे देखते हुए इस नए प्रस्ताव पर बहुत उम्मीदें नहीं बांधी जा सकती हैं। इस बार नौकरीपेशा लोगों को बजट में मायूसी मिली है। उन्हें उम्मीद थी कि आयकर में उन्हें कुछ छूट मिलेगी। लेकिन अरुण जेटली ने इनकम टैक्स छूट सीमा में कोई बदलाव नहीं किया है, हालांकि स्टैंडर्ड डिडक्शन की शुरूआत फिर से करके सैलरी वाले लोगों को थोड़ी राहत जरूर दी है। इस बजट में रेल बजट भी शामिल था। रेलवे के विस्तार के लिए सरकार ने १.४८ लाख करोड़ रुपये खर्च करने का ऐलान किया है। इसके अलावा सभी रेलगाड़ियों को वाई-फाई, सीसीटीवी और अन्य अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस करने जैसी बातें दोहराई गई हैं। बजट की कुछ अन्य खास बातें रहीं। निजी कंपनियों को यूनीक आईडी से जोड़ना, क्रिप्टोकरेंसी के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए हरसंभव प्रयास, ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधा सुगम बनाने के लिए पांच लाख वाई-फाई हाटस्पाट, दो करोड़ शौचालयों का निर्माण आदि। इसके अलावा सरकार ने औद्योगिक अनुकूल रक्षा उत्पादन नीति २०१८ का ऐलान किया है और दो रक्षा औद्योगिक गलियारे विकसित करने की बात कही है। जाहिर है इसका लाभ उन उद्योगपतियों को मिलेगा जो सरकार के बड़े रक्षा सौदों में अहम भूमिका निभा रहे हैं। बजट के आखिरी में जेटलीजी ने स्वामी विवेकानंद के नए भारत के विचारों को दोहराया। लेकिन लगता है कि यह सपना, सपना ही रहेगा। जिसमें सरकार की ओर से बातें तो बहुत अच्छी-अच्छी होती हैं, लेकिन धरातल पर जो कुछ घटता है। चुनावों में जाने के पहले मोदी सरकार के पास बजट का यह आखिरी मौका था। जिसे भुनाने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)—11/6129/2016-17-18 प्राप्तेषु
रजि. सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 21 फरवरी से 27 फरवरी 2018 तक

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।